कचनार

(भाग - 2)

सातम कक्षाक मैथिली भाषाक पाठ्यपुस्तक

(एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार, पटना द्वारा विकसित)
बिहार स्टेट टेक्स्ट बुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना द्वारा प्रकाशित

दिशा बोध-सह-पाठ्य पुस्तक विकास समन्वय समिति

1. **श्री राजेश भूषण**
   राज्य परियोजना निदेशक, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना
2. **हसन वारिस**
   निदेशक (प्रभारी), एस.सी.ई.आर.टी., पटना
3. **श्री मुखदेव सिंह**
   क्षेत्रीय शिक्षा उप निदेशक, तिरहुत प्रमण्डल, मुजफ्फरपुर
4. **श्री रामेश्वर पाण्डेय**
   कार्यक्रम पदाधिकारी, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्,, पटना
5. **श्री वसंत कुमार**
   शैक्षिक निबन्धक, बी.टी.बी.सी., पटना
6. **डॉ० सैयद अब्दुल मोइन**
   सदस्य सचिव, विभागाध्यक्ष, एस.सी.ई.आर.टी., पटना
7. **डॉ० श्वेता सांडिल्य**
   शिक्षा विशेषज्ञ, यूनिसेफ, पटना
8. **डॉ० ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी**
   प्राचार्य, टी.आई.एच.एस., पटना

पाठ्य-पुस्तक विकास समिति

लेखक सदस्य :

1. **डॉ० कमला कान्त भण्डारी,** व्याख्याता (मैथिली),
   राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, लाल बहादुर शास्त्रीनगर, पटना- 23
2. **डॉ० महेन्द्र नारायण राम,** शिक्षा उपाधीक्षक, दरभंगा
3. **श्रीमती कविता कुमारी,** शिक्षिका,
   राजकीय मध्य विद्यालय, पाली, प्रखण्ड-बेनीपट्टी, (मधुबनी)

समन्वयक :

1. **डॉ० अर्चना,** व्याख्याता,
   एस.सी.ई.आर.टी., पटना

समीक्षक :

1. **श्री मोहन भारद्वाज**
   साहित्यकार, पटना
2. **डॉ० इन्दिरा झा**
   वाचक, मैथिली विभाग, रामकृष्ण द्वारिका महाविद्यालय, कंकड़बाग, पटना

अभार :- यूनिसेफ, पटना

आमुख

शिक्षाक प्रारंभिक स्तरक छात्रमे शैक्षिक अभिवृद्धि करबाक एहन क्षमता होइत छैक जाहिमे ओकर सम्पूर्ण व्यक्तित्व ओ भविष्य समाहित रहैत अछि । एहि अवधिमे प्राप्त ज्ञान, अनुभव, जीवनक प्रति संवेदनशीलता ओ सौन्दर्यबोध, ओकर भविष्यक असीम संभावनासँ सम्बद्ध रहैत अछि। सुनबाक आ पढ़बाक योग्यता, मौखिक आ लिखित अभिव्यक्तिक क्षमता, सौन्दर्यग्राह्यता, मौलिकता आ सर्जनशीलता ओ सद्वृत्तिक विकास सेहो एहि अवधिमे होइत अछि । संगहि छात्रक शब्द-सामर्थ्य, तार्किक तथा चिन्तनक क्षमता बढ़ैत अछि । राष्ट्रीय लक्ष्यक बोध आ ताहि दिस चेतना जगैत अछि । एही परिप्रेक्ष्यमे छात्रक मानसिक क्षितिजक विस्तार कयल जाइत अछि ओ ओकर अनुभूतिकेँ तीव्र आ मनोभावकेँ उदात्त बनाओल जाइत अछि ।

उपर्युक्त बिन्दु सभकेँ ध्यानमे राखि प्रस्तुत पोथीमे सात गोट पद्य ओ आठ गोट गद्य पाठक अतिरिक्त एकटा उड़िया कथाक मैथिली अनुवादक आवश्यकतानुसार चयन कयल गेल अछि । कथा, कविता, लेख, यात्रावृत्तान्त, एकांकी, लोकसाहित्य आदि साहित्यिक विधाक माध्यमे पर्यावरण, नदी-नाला, तीर्थस्थान, प्रकृति, राष्ट्र-प्रेम, साम्प्रदायिक-सद्भाव, ग्रामीण-परिवेश, ऐतिहासिक-लोकपुरुष ओ महापुरुषक प्रति सम्मानभाव आदिक अभिव्यक्ति भेल अछि ।

देश महान अछि । आत्मगौरव एवं स्वाभिमानक भाव प्रकट करबाक लेल सर्वप्रथम 'मातृभूमि-भारत' नामक कवितासँ पाठ आरंभ कयल गेल अछि । जंगल, सघन गाछ-वृक्ष, नदी-पहाड़, खेती-बाड़ी, भाषा, संस्कृति, साहित्य आदिसँ सम्बद्ध गौरवमय इतिहासक प्रति उत्सुकता जगयबाक लेल 'मिथिला आ ओकर भूमि' नामक गद्यपाठक चयन कयल गेल अछि । एहि तरहेँ साम्प्रदायिक सौहार्दक लेल 'किए लड़ै छी' (पद्य) आ जातिविहीन, सम्प्रदायक भावनासँ मुक्त लोकक जीवनक हेतु 'राष्ट्रीय एकता' (गद्य) क माध्यमे देशक प्रति सहज भक्ति-भावना जगयबाक प्रयास कयल गेल अछि । पर्यावरणक प्रदूषण मानवक लेल खतरा भेल

जा रहल अछि । वार्त्तालाप शैलीमे 'वन ओ वनस्पति' मानव-सभ्यताक संग नदीक लाभक प्रति बच्चाक उत्सुकताक वृद्धि एवं ज्ञानवर्द्धन हेतु 'मिथिलाक नदी', देशक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर 'राजगृह एवं नालन्दा' शीर्षक यात्रा-वृत्तान्त छात्रक लेल उपयोगी होयत । पुण्यधामक वर्णन 'मिथिलाक तीर्थ' मे होइत अछि तँ मिथिलाक लोक-संस्कृति ओ लोक-पुरुषक दर्शन 'राजा सलहेस' मे होइत अछि। मिथिलाक महत्व 'की थिक मिथिला' मे दिग्दर्शित होइत अछि तँ दोसर दिस गामक मिठास आ आत्मीयताक अनुभव 'हमरे गाम' मे होइत अछि । प्राकृतिक आपदासँ अस्त-व्यस्त जन-जीवनक अनुभूति 'अकाल' मे अछि तँ सुन्दर छटा ओ सुखद प्राकृतिक सुषमा 'वसंत गीत' मे पबैत छी। तनावसँ मुक्ति लेल हास्यपरक कविता 'मूसक महिमा' देल गेल अछि । एकांकी 'संतोषक गाछ' मे मिथिलाक सांस्कृतिक भाव तँ बहिते अछि, संगहि छात्रकेँ प्रेरणा सेहो भेटैत अछि । अन्तमे, दोसर भाषासँ परिचित करयबाक लेल उड़िया कथाक मैथिली अनुवाद मात्र पढ़बाक उद्देश्यसँ देल गेल अछि । यद्यपि पाठांतमे कठिन शब्दक अर्थ देल गेल अछि तथापि शब्दकोश देखबाक विधि आ प्रवृति जगयबाक उद्देश्यसँ पुस्तकक अन्तमे ओहि समस्त शब्दक अर्थक अतिरिक्त किछु आओर शब्दार्थ दऽ देल गेल अछि जे निश्चित रूपेँ छात्रक शब्द-भण्डार बढ़ाओत ।

एहि तरहेँ तथ्यपरक ओ विचारपरक उपर्युक्त पाठ्यसामग्रीक एकठाम संकलन निश्चित रूपेँ छात्र लोकनिक ज्ञानवर्द्धन करत । हुनकर भाषाजन्य क्षमता, दक्षता, कुशलता, संवेदनशीलता ओ सौन्दर्यबोधक विकास करत, से विश्वास अछि ।

हम आभारी छी सर्वप्रथम ओहि लेखक, कवि लोकनिक जनिक पाठ हमरा प्राप्त भेल अछि, आ जाहिसँ हमर ई काज सहज भऽ सकल । अपन गुरुजनलोकनिक प्रति, जनिक मार्गदर्शन प्रत्यक्ष ओ परोक्ष रूपेँ हमरा भेटल अछि, आभार प्रकट करब हमरासभक कर्त्तव्य थिक।

सुधी समाजक सुझाव ओ दिशा-निर्देश हमरा आगाँ काज आओत से आशा ।

हसन वारिस
निदेशक (प्रभारी)

विषय-सूची

1.	मातृभूमि भारत	01 - 04
2.	मिथिला आ ओकर भूमि	05 - 09
3.	किए लड़ै छी ?	10 - 13
4.	राष्ट्रीय एकता	14 - 18
5.	हमरे गाम	19 - 22
6.	मिथिलाक तीर्थ	23 - 28
7.	वन ओ वनस्पति	29 - 38
8.	की थिक मिथिला	39 - 42
9.	राजगृह आ नालन्दा	43 - 49
10.	अकाल	50 - 53
11.	राजा सलहेस	54 - 59
12.	वसंत गीत	60 - 62
13.	मिथिलाक नदी	63 - 66
14.	मूस महिमा	67 - 71
15.	संतोषक गाछ	72 - 84
16.	दुपहरि राति (उड़िया कथाक मैथिली अनुवाद)	85 - 88
	(अतिरिक्त पाठ)	

1

मातृभूमि भारत

सिक्त करथि जकरा भूतल कैँ

कावेरी ओ गंगा ।

पुण्यभूमि एहि भारत वर्षक

राष्ट्रिय ध्वजा तिरंगा ।।

'जन-गण-मन-अधिनायक जय हे

भारत-भाग्य-विधाता' ।

राष्ट्रगान ई हमरा देशक

एकरहिसँ अछि नाता ।।

एकरहि माँटि-पानिसँ देहक

जीवन-रस हम पाबी ।

हमर धर्म थिक, एकरहि निशि-दिन

गीत विजय केर गाबी ।।

मातृभूमि ई पावन धरती

करी एकर हम सेवा ।

जन्मभूमिसँ बढ़ि कऽ कोनो

ने देवी ने देवा ।।

यदि छी भारतवासी राखी

एकरा पर यदि दाबी ।

चानन सन बुझि एकर धूलिकण

अपना शीश लगाबी ।।

- रामदेव झा

प्रश्न ओ अभ्यास

कवितासँ

1. भारतक राष्ट्रध्वजमे कोन-कोन रंग अछि ?
2. भारतक राष्ट्रगान की अछि ?
3. कवि मातृभूमिक सम्बन्धमे की उपदेश देलनि अछि ?
4. कवि धूलिकण कँ अपन शीशमे लगाबय किएक कहैत छथि ?

कवितासँ आगू

1. एहि कवितासँ अहाँकँ की प्रेरणा भेटैत अछि ?
2. भाव विस्तार करू

जन्मभूमिसँ बढ़ि कऽ कोनो
ने देवी ने देवा ।।

अनुमान आ कल्पना

1. भारत देश पर रचित कोनो आन कविताकँ ताकि अपन अभ्यास पुस्तिकामे लिखू ।
2. वर्गमे देश भक्तिसँ सम्बन्धित कविता सुनाउ ।
3. मातृभूमिक परिचय आ महत्त्वक सम्बन्धमे शिक्षकसँ ज्ञान हासिल करू ।

भाषा अध्ययन

1. वाक्य बनाउ

पुण्यभूमि, ध्वजा, राष्ट्रगान, धर्म, मातृभूमि, भारतवासी

2. कवितासँ पाँच गोट विशेषण शब्द चुनि कऽ लिखू ।

3. विपरीतार्थक शब्द लिखू
पुण्य, दिन, विजय, जीवन,

4. वर्णक सार्थक समूह शब्द कहबैछ । जातिक आधार पर शब्द पाँच प्रकारक होइछ-

1. संज्ञा, 2. सर्वनाम, 3. विशेषण, 4. क्रिया आ 5. अव्यय । भारत, गाय, चाउर आदि संज्ञा शब्द अछि । भारत- स्थानवाचक, गाय जातिवाचक आ चाउर द्रव्यवाचक। एहि तरहेँ संज्ञा अनेक प्रकारक होइछ । कवितामे कोन-कोन तरहक संज्ञा आयल अछि, सूची बनाउ ।

शब्दार्थ

मातृभूमि	–	जन्म स्थान
भूतल	–	धरती
ध्वजा	–	झण्डा
निशि	–	राति
शीश	–	माथ
पुण्य	–	नीक फलक उत्पादक

●

2

मिथिला आ ओकर भूमि

मिथिला बिहार राज्य ओ नेपाल देशक एक गोट बेस विस्तृत ओ अत्यन्त सघन क्षेत्र थिक । एहि क्षेत्रक ठीक-ठीक सीमा युग-युगमे परिवर्तित होइत रहल; तथापि एकरा सर्वसाधारण सर्वदा एकटा विशिष्ट क्षेत्र बुझैत आयल अछि जकर अपन स्वतन्त्र परम्परा रहलैक अछि ओ अपन सभ वस्तुक गर्व रहलैक अछि । वर्तमान कालमे एकरा तिर्हुत वा मिथिला कहल जाइत छैक किन्तु इतिहासक सभसँ प्राचीन युगमे एकरा ''विदेह'' कहल जाइत छलैक तथा एकरा सीमाक भीतर मिथिला ओ वैशाली सभसँ महत्त्वपूर्ण प्रान्त छल । चारिम ओ पाँचम शताब्दी इस्वी होइत-होइत ई जनपद ''मिथिला'' अथवा ''तीरभुक्ति'' कहाए प्रसिद्ध भऽ गेल छल । मुगल शासन-कालमे एहि जनपदक उत्तर भाग नेपालक अधीन भऽ गेल । मात्र भारतीय शासकक अधीन जनपद ''तिर्हुत'' (अथवा तिरहुत) कहबैत रहल । एही नामसँ एकटा सरकारक निर्माण बिहार सूबाक अंग बनाए प्रचलित कयल गेल । एहि तिर्हुत सरकार केर सीमा हाजीपुर, मुंगेर एवं पुर्णिया सरकार सभ छल । ब्रिटिश शासनक समय ''तिर्हुत'' (अथवा तिरहुत) नामक बिहार प्रान्तक डिवीजन बनल जाहिमे मुजफ्फरपुर, दरभंगा, चम्पारण ओ सहरसा जिलाक सन्निवेश छल किन्तु जनसाधारण मोटामोटी गंगाक उत्तरक समस्त बिहार प्रान्तकेँ एहि नामे बुझैत रहल । आइओ मैथिली भाषी क्षेत्रक एकटा हराहरी भाषायी सीमा इएह सकल साधारण जनता बुझैत अछि अर्थात् गंगाक उत्तर समस्त बिहार राज्य। ग्रिअर्सन आधुनिक कालमे मैथिली भाषी क्षेत्रक सीमा ठीक-ठीक निर्धारण करबाक बड़ यत्न कयलनि ।

मिथिलाक भूमि प्राचीन कालसँ नीचाँ एवं पाँकसँ युक्त अछि जाहिमे खूब घन जंगल ओ सघन गाछपात भरल अछि । ई क्षेत्र नदी-नदीसँ परिपूर्ण अछि तथा वर्षमे अधिक काल बुझाइत

रहैछ जे नेपालसँ गंगाकात धरि एकटा अस्थायी सरोवर सभक विशाल श्रृंखला अछि जे नेपाल सँ गंगामे खसैत असंख्य पहाड़ी नदी सभक धारसभसँ एकार्णव भेल अछि । एहि क्षेत्रक अधिकांश भूमि जाड़काला धरि सुखाइत नहि रहैछ आर कतहु तँ यातायात वर्षमे तीनिए चारि मास सम्भव होइत छैक । ''नदीमातृक'' भेलाक कारणहिँ 1934क भूकम्प मिथिलामे ओतेक विनाशकारी भेल रहए । खेती-बाड़ीक प्रगति भेलासँ एवं यातायातक साधनसभक विस्तार होएबाक कारणेँ आब घन जंगल सभ एवं विशाल चओरसभ दिनानुदिन कम भेल जा रहल छैक। सम्प्रति कतहु तेहन घन ओ विशाल वन नहि रहि गेल छैक जाहिमे पैघ-पैघ हिंसक बनैआ जन्तुकेँ निरापद आश्रय भेटि सकैक ।

एहि क्षेत्रक जलवायु साधारणत: बर्षक अधिकांश भागमे शीतल ओ सुखद रहैछ। एम्हर हालमे बहुतो एहन कारण भेल छैक जाहिमे एकटा इहो अछि जे 1934क विध्वंसकारी भूकम्पक पश्चातसँ निरन्तर भीषण ओ दीर्घकालीन बाढ़ि सभक प्रकोप ओ जखन-तखन तीव्र दुर्भिक्षक चपेट पारी लगओने रहैछ – एहि ठामक जलवायुकेँ अस्वास्थ्यकर, आलस्यकर एवं मन्द बनाए देलक अछि । फलस्वरूप जनताकेँ विशेष कष्ट उठाबए पड़ि रहल छैक । किएक तँ एहिसभक कारणेँ जे लोककेँ आलसी प्रवृत्ति भऽ गेल छैक सएह हुनकासभक वर्तमान शोचनीय दशाक हेतु भऽ गेल अछि किन्तु पहिने एना नहि छल लोक प्रसन्न ओ समृद्ध छल, शान्तिमय ओ सुखमय जीवन छलैक, जाहिसँ मौलिक कला ओ विद्या सृजन करबाक प्रेरणा होइत रहैत छलैक । खएबा-पिउबाक पर्याप्त सुविधा छलनि, ओ दैनन्दिन जीवनयात्राक आवश्यकतासभकेँ पूर्ति करबाक हेतु आपेक्षिक कठोर परिश्रम करबाक अनिवार्यता नहि छलनि । सभ्यताक आदिकालहिसँ ई सभ कला कौशलक अनवरत ''व्यवसाय'' करैत रहलाह एवं ज्ञान ओ दर्शनक अनेक मार्गसभक सुव्यवस्थित रूपेँ अनुसन्धान करबामे समर्थ भेलाह । एहि दिशामे ई क्षेत्र आदिकालेसँ एकटा अपन सभसँ फुट संसार बनओने छल । एहि प्रकारक संकुचित एकाकी जीवनक फलस्वरूप, अथवा अनेको बाहरी आक्रमणोक होइतो शान्तिमय साधारण जनजीवनक कारणेँ एहिठामक लोककला-कौशलमे तथा विद्याक क्षेत्रमे आगू रहलाह ।

– जयकान्त मिश्र

प्रश्न ओ अभ्यास

पाठसँ

1. मिथिला कोन-कोन नामसँ जानल जाइत अछि ?
2. 'नदीमातृक' ककरा कहल गेल अछि आ किएक ?
3. 1934 ई० मे मिथिलामे विनाशकारी बाढ़ि आयल छल की भूकम्प ?
4. मिथिलामे घनगर जंगल आ विशाल चओर सभ आब दृष्टिगोचर नहि होइछ तकर की कारण ?
5. मिथिलाक जलवायु केहन अछि ?
6. पाठक आधार पर बताउ जे मिथिलावासीक दशा वर्त्तमानमे शोचनीय भऽ गेल अछि मुद्रा पूर्वमे से नहि छल कोना ?
7. मिथिलावासी कोन क्षेत्रमे आगू रहलाह अछि ?

पाठसँ आगू

1. ग्रिअर्सन, चन्दा झा आदि विद्वान द्वारा मिथिलाक सीमाक निर्धारण कयल गेल अछि । शिक्षकक सहायतासँ तकरा एकत्र कऽ लिखू ।
2. मिथिलाक भूमि, जलवायु आ कला-कौशलक सम्बन्धमे शिक्षकसँ जानकारी प्राप्त करू ।

अनुमान आ कल्पना

1. मिथिलेटा नहि आनो क्षेत्रमे सघन जंगलक अभाव भऽ गेल अछि । शिक्षकसँ सहायता लऽ जंगलसँ होमऽवला लाभक संबंधमे एक अनुच्छेद लिखू ।
2. मिथिलामे बाढ़िसँ होमऽवला क्षतिकेँ रोकबाक हेतु अहाँ अपन विचार दैत वर्गमे एहि विषय पर चर्चा करू ।

3. 1934क बाद मिथिलामे कहिया-कहिया भूकम्प भेल ? अपन जेठक संग चर्चा कऽ लिखू ।

भाषा अध्ययन

1. 'नदी' शब्दमे वर्णकेँ आगाँ-पाछाँ कयला पर दीन भऽ जाइत छैक । अर्थ भऽ जाइछ गरीब । एहिना राम, रस शब्दकेँ अक्षर बदलू आ ओकर अर्थ लिखू ।

2. संज्ञा शब्दक बदला जाहि शब्दक प्रयोग होइछ, ओ सर्वनाम शब्द कहबैछ। जेना- राम बालक अछि । ओ पढ़बामे तेज अछि । ओकर घर दरभंगा छैक। एतय राम संज्ञाक लेल 'ओ' आ 'ओकर' शब्द प्रयुक्त भेल अछि। ई दुनू शब्द सर्वनाम थिक। पाठमे आयल सर्वनाम पदकेँ चुनि कऽ लिखू ।

3. 'दुर्भिक्षक चपेट पारी लगओने रहैछ । 'एतय पारी लगायब' लोकोक्ति थिक। अर्थ होइछ भाँज लगायब । शिक्षकक सहयोगसँ पाँचटा लोकोक्तिक सूची बनाउ आ ओकर अर्थ लिखू ।

4. गोनू झा खिस्सा कहलनि । गोनू झा खिस्सा कहैत छथि । गोनू झा खिस्सा कहताह। एहि वाक्य सभमे एकहिटा 'कहब' क्रिया प्रयुक्त अछि मुदा तीनू वाक्यमे कहबाक रूप बदलल अछि । पहिल वाक्यमे 'कहलनि' भूतकालमे कहबाक क्रिया भेल छल, ई अर्थ-बोध होइत अछि । दोसर वाक्यमे 'कहैत छथि' सँ बुझाइत अछि जे कहब क्रिया वर्त्तमान समयमे भऽ रहल अछि । तेसर वाक्यमे 'कहताह' सँ प्रतीत होइत अछि जे क्रिया आबऽवला समयमे होयत । क्रियाक ई रूप परिवर्तन काल-बोध करेबाक लेल भेल अछि । अहिना निम्न क्रियाक रूप लिखू -

क्रिया	भूतकाल	वर्त्तमानकाल	भविष्यत्काल
पढ़ब	.....	.....	.....
चलब	.....	.....	.....
हँसब	.....	.....	.....
बैसब	.....	.....	.....
गायब	.....	.....	.....

शब्दार्थ

सन्निवेश	–	मिलल
एकार्णव	–	अतिशय जलप्लावित
जाड़काला	–	जाड़क समय
निरन्तर	–	लगातार
दीर्घकालीन	–	बेसीकाल धरि रहऽवला
अनवरत	–	लगातार
हराहरी	–	मोटा-मोटी

●

3

किए लड़ै छी

भाइजी, किए लड़ै छी जाति-धरम के नाम पर ?
घुरियौ अप्पन ठाम पर ।
एक्के चान सुरुज आ तारा
एक्के धरती माँक सहारा
जल मे किसिम-किसिम के मोती
लेकिन, एक्के कूल-किनारा
भाइजी, एके बात लागू छै अल्ला-राम पर
घुरियौ अप्पन ठाम पर ।

जेहने हमरा मुँह के बोली
तेहने बहिना तों हमजोली
मनमे प्रीत हमर जै रँग के
तेहने तोरो हृदय के होली
बहिनो, ताजिनगी हम रहब संगहि एहि धाम पर
घुरहक अप्पन ठाम पर ।

सबके मिलने धरती सुन्दर
सबके टुटने चालि छुछुन्दर
धारा अलग बहय तँ नदिया
सब मिलि जाय तँ बनय समुन्दर
भाइजी, अतमा देखू जुनि भरमाबू चाम पर
घुरियौ अप्पन ठाम पर ।

- तारानन्द वियोगी

प्रश्न ओ अभ्यास

कवितासँ

1. कवि जाति-धर्मक नाम पर लड़ैत लोककेँ की कहि रहल छथि ?
2. 'घुरियौ अपन ठाम पर' सँ कविक की तात्पर्य छनि ? लिखू ।
3. 'भाइजी, अतमा देखू, जुनि भरमाबू चाम पर' पाँतीसँ कवि की कहय चाहैत छथि?

कवितासँ आगू

1. सभ जाति धर्मक लोककेँ एक्के धरती मायक सहारा छैक, कोना ? फरिछाकऽ लिखू ।
2. सभक मिलने धरती सुन्दर भऽ जाइत छैक, कोना ? स्पष्ट करू ।
3. शिक्षकक सहयोगसँ एहने साम्प्रदायिक एकताक कविताक सूची तैयार करू।

अनुमान आ कल्पना

1. अल्ला आ राम दुनू पर कोन एक्के बात लागू छैक ? सहपाठीक संग आपसमे बात-चीत कऽ कऽ लिखू ।
2. भाइजी आ बहिनजीसँ कविक की अभिप्राय छनि ?

भाषा अध्ययन

1. भाइजीसँ भाइकेँ, बहिना सँ बहिनकेँ सम्बोधित कयल जाइत छैक । एहिना ननदि आ भाउजक लेल सम्बोधनक शब्द लिखू ।

2. छुछुन्दर चालि मुहावरा अछि । अर्थ अछि–खराब चालि । मूस चालि, गदहा चालि आ कछुआ चालिक अर्थ होइछ क्रमशः मूस जकाँ चालि, गदहा सन चालि आ कछुआ सन चालि । एहि सभक प्रयोग अपना वाक्यमे करू ।

शब्दार्थ

ठाम	–	स्थान
कूल	–	किनारा
हमजोली	–	संगी
प्रीत	–	प्रेम
ताजिनगी	–	जीवन भरि
अत्मा	–	आत्मा
चाम	–	खाल

●

4

राष्ट्रीय एकता

भारतवर्ष हमरा लोकनिक माताक समान अछि । कहल जाइत छैक जे जननी आ जन्मभूमिक स्थान स्वर्गो सँ ऊपर अछि । ''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'' । भारतवर्ष एहन महान राष्ट्र अछि जतय अनेक धर्मक अनुयायी, अनेक मतावलंबी, अनेक प्रजातिक लोक, अनेक भाषा-भाषी निवास करैत अछि । एतय अनेक प्रान्त अछि जकर भिन्न संस्कृति छैक, खान-पान छैक, रहन-सहन छैक । सभ एक भारत माताक संतान अछि । अनेकतामे एकता भारतीय गणराज्यक विशेषता अछि । हमरा लोकनि स्वयंकेँ भारत माताक संतान मानैत छी । अनेक प्रान्तमे विभक्त रहितो ई एक राष्ट्र अछि । एकर एक राष्ट्रपति छथि । एक प्रधानमंत्री छथि । एक सर्वोच्च न्यायालय अछि ।

भौगोलिक दृष्टिसँ हमर राष्ट्र विशाल अछि । एकर एक प्रान्त यूरोपक अनेक देशसँ विस्तृत अछि । एकर उत्तरमे गिरिराज हिमालय अछि । तँ दक्षिणमे हिन्द महासागर, पूब मे बंगालक खाड़ी तथा पच्छिममे अरब सागर अछि । भारतक प्रमुख धर्ममे हिन्दू, बौद्ध, जैन, सिख, इस्लाम, पारसी तथा ईसाई अछि । सभ अपन धर्म-कर्ममे विश्वास रखैत छथि। मंदिर, मस्जिद, मठ, गिरजाघर, गुरुद्वारा सभक समान रूपसँ भारतीय आदर करैत छथि । एतय फगुआ, दुर्गापूजा, दीयाबाती, ईद, बकरीद, महावीर-जयन्ती, नानकदेव जयन्ती, क्रिसमस आदि पर्व सभ श्रद्धापूर्वक मनबैत छथि । भारतीय संस्कृतिक सभसँ पैघ विशेषता अछि जे जीवनमे योग एवं त्यागक समन्वय करब । एतय बसुधाकेँ कुटुम्ब मानल जाइत अछि । भारतीय संस्कृति सिखबैत अछि जे सुख-दुख, लाभ-हानि,

विजय-पराजय, हर्ष-विषाद सभमे समभाव बनओने रही । भारतीय साहित्य, संगीत, मूर्तिकला, चित्रकला, वास्तुकला, नृत्यकला आदि सुख प्रदान करय बला अछि ।

विदेशी आक्रमणकारी देशवासीकेर फूट-फूट करबाक प्रयास कयलनि । एकर परिणाम भेल जे फिरंगी हमर देशकेँ अनेक वर्ष धरि गुलाम बनौने रहल । देशक उत्थान तखने संभव होइत

अछि जखन समस्त भारतवासी एकताक सूत्रमे आबद्ध रहथि । जेना विविध फूलक बनल माला होइत छैक तथा रंगरूप, सुगंध सभक फराक-फराक रहैत छैक तहिना प्रत्येक राज्यसँ बनल राष्ट्रक शोभा बढ़ैत छैक । भारतक राष्ट्र निर्माता धर्म निरपेक्षताकेँ आदर्श बनौलनि । राष्ट्रीय एकतामे जे बाधक तत्व अछि जेना परस्पर वैमनस्य, ईष्या-द्वेष, अहंकार आदि केँ छोड़य पड़त । जखने हमरा लोकनि खंड-खंड होयब, हमरा लोकनिक शक्तिक ह्रास होयत तथा विदेशी हमर कमजोरीक लाभ उठा लेत । एकतासँ देश विकसित होइत छैक तथा देशवासीक उन्नति ओ कल्याण होइत छैक । स्वतंत्रता संग्राममे सेहो भारत मायक सपूत लोकनि अपन बलिदान देलनि बिना कोनो धार्मिक भेद-भावक । राष्ट्रीय एकताकेँ कायम राखब हमरा लोकनिक प्राथमिकता अछि । एक दोसरकेँ जोड़ि देल जाइत अछि तखने लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था स्थापित होइत अछि । आवश्यक अछि जे राष्ट्रीय एकताकेँ अक्षुण्ण रखबाक लेल भावी पीढ़ीकेँ पाठ पढ़ाओल जाय। संत लोकनि कहने छथि जे मानव मात्रक कल्याण करब भारतीय संस्कृतिक मूल तत्त्व अछि । पश्चिमी देशक लोक जे भौतिकवादमे विश्वास रखैत छथि ओ आब भौतिकतासँ मुँह मोड़ि रहल छथि। त्याग, तपस्या, दया, संतोषक स्थान भोगवाद ओ भौतिकवाद लऽ लेलक अछि । अपन राष्ट्रभाषा छोड़ि विदेशी भाषाक विकास दिस लोक अग्रसर भऽ रहल अछि । प्रत्येक क्रियाकलापमे हमरा लोकनि पश्चिमी देशक अनुकरण करैत छी । नीक-बेजाय लोक किछु नहि बूझि रहल अछि । आधुनिकताक रंगमे डूबिकऽ लोक संवेदना शून्य भऽ रहल अछि । स्वार्थपरता लोकक मानस पर प्रभाव जमा लेलक अछि । असहिष्णुतासँ आतंकवादक जन्म भेलैक अछि। देशक अखंडताक लेल ई घातक अछि ।

राष्ट्रीय एकता नष्ट नहि हो एहि लेल विचार-विमर्शक माध्यमसँ देशवासीक मोनमे ई एकताक भावना उत्पन्न करबाक अछि । क्षेत्रीय असंतुलन दूर करब तथा जनसाधारणक हितक रक्षा करब आवश्यक अछि । आर्थिक विषमता असंतोषकेँ जन्म दैत छैक तेँ सामाजिक विसंगति, विषमता दूर करबाक अछि । उदार परिस्थितिक निर्माण राष्ट्रीय भावनाकेँ सुदृढ़ करैत छैक । हमरा लोकनिक ई कर्त्तव्य बनैत अछि जे राष्ट्रीय एकताकेँ महत्त्व दी ।

- इंदिरा झा

प्रश्न ओ अभ्यास

पाठसँ

1. राष्ट्रीय एकता की थिक ?
2. ''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'' शब्दक भाव स्पष्ट करू ।
3. भारतक चौहद्दी बताउ ।
4. भारतमे कोन-कोन पावनि होइत अछि ?
5. भारतमे कोन प्रकारक विविधता अछि ?

पाठसँ आगू

1. राष्ट्रीय एकताक भावना कोना विकसित होयत ?
2. अपनामे एकता रहने की फल होयत ?

अनुमान आ कल्पना

1. अपना देशक नागरिककेँ गम्भीरतासँ की विचारबाक चाही ?
2. आइ देशक समक्ष एकताक केहन पृष्ठभूमिक आवश्यकता अछि ?

भाषा अध्ययन

1. पाठसँ पाँच गोट विशेषण चुनिकऽ वाक्य बनाउ
2. विपरीतार्थक शब्द लिखू

   विशाल, अखंड, विजय, उत्थान, विदेशी,
3. जन्मभूमि स्वर्गसँ ऊपर अछि । एहि वाक्यमे 'अछि' वर्त्तमान कालक क्रिया अछि। एकर भूत कालिक रूप होइछ 'छल' । जेना -बटुक पोथी पढैत छल । एकरे रूप अछि-छैक आ छथि । शिक्षकक सहयोगसँ छैक आ छथिकेँ अपना वाक्यमे प्रयोग करब जानू ।

शब्दार्थ

जन्मभूमि	–	जन्म स्थान
स्वर्गादपि	–	स्वर्गसँ बढ़ि कऽ ।
अनुयायी	–	अनुगामी
वसुधा	–	धरती
कुटुम्ब	–	अतिथि
फिरंगी	–	अंग्रेज
राष्ट्र	–	देश
अक्षुण्ण	–	अखण्ड
असहिष्णुता	–	सहनशक्तिक अभाव

●

5

हमरे गाम

घर-घर चर्खा टकुरी ताग,
बाड़ी-बाड़ी पटुआ साग ।
चुभकै लेल चभच्चा पानि,
लाबा लै अछि सजल मखान ।
लतरल बेढ़ भीड़ पर पान ।
मुह मे लाली, गर मे गान ।
सबतरि केरा आम लताम ।
सभ सँ सुन्दर हमरे गाम ।

रोटी दालि चपाती खाइ,
कखनहु खोंटि मरिच-मरिचाइ ।
सभसँ स्वदगर रुचिगर भात,
आमिल मिलल दालि जँ पात ।
आलुक दम सँ चटकर झोर,
हमर दही आनक अछि घोर ।

चूड़ा नवका सूगा रंग,

छल्हिगर दही अपूर्वे संग ।

सरिसो सागक झँसिगर स्वाद,

भोजन हमर सभक अपवाद ।

नहर काटि जे सीचल भूमि,

रेल उपर सँ देखल घूमि ।

हमर बाध अछि दोसरे रूप

ने पटबै ले, नल ओ कूप ।।

गंडक कमला धारक कात,

जतय पानि हो भरि बरसात ।

ने अछि ऊसर ने अछि रेत,

सभसँ ससिगर हमरहि खेत ।।

- सुरेन्द्र झा 'सुमन'

कवितासँ

1. गाममे की सभ होइत अछि ? कविताक आधार पर लिखू ।
2. गामक लोकक भोजन की सभ छैक ?
3. गामक विकास लेल की सभ उपाय भेल अछि ? वर्णन करू ।

कवितासँ आगू

1. गाममे चर्खा-टकुरी चलैत छल । की आब चलैत अछि ? जँ चलैत अछि तऽ कोना ? जँ नहि तँ किएक ? एहि पर अपन विचार लिखू?
2. कवितामे गामक भोजनक चर्चामे किछु नाम गनाओल अछि । जेना-रोटी, भात, दालि, चपाती, आमिल मिलल दालि, आलूक दम, दही आ घोर, नवका चूड़ा, सरिसो साग आदि । एहिक संगे गामक भोजनमे आनो-आन सामग्रीक ओरिआन होइत अछि । एकर सूची बनाउ ।

अनुमान आ कल्पना

1. गाममे शहरक प्रभुत्व प्रवेश कयलक अछि । एकर की कुप्रभाव पड़ैत अछि? एकरा कोना छोड़ि सकैत छी ? -एहि विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिताक आयोजन करू ।
2. शहरसँ कोनो परिवार आबि गाममे बसि गेल छथि । घरमे नव-नव वस्तुक उपयोग कऽ रहल छथि । की ओहने वस्तुक प्रबंध करब आवश्यक बुझैत छी? लिखू।

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखू -

   लाली, सुन्दर, स्वदगर, नवका, ऊसर ।

2. आमसँ अमैया आ झोरसँ झोरगर विशेषण शब्द बनैछ । एहिना - साग, भात, घोर, दालि आ पानिसँ विशेषण शब्द बनाउ ।

शब्दार्थ

बेढ़	-	घेरा
आमिल	-	खटाइ (काँच सुखायल आमक)
अपूर्व	-	बेजोड़/विलक्षण
अपवाद	-	सामान्य सँ भिन्न ।
ऊसर	-	अनउपजाउ खेत
रेत	-	बाढ़ि, बालु
ससिगर	-	शीशवला

●

6

मिथिलाक तीर्थ

मिथिला प्राचीनकालहिसँ संसारक एक प्रमुख सिद्धपीठ रहल अछि । ई महाशक्तिक उपासनाक मूल केन्द्र थिक । उच्चैठ, कपिलेश्वर स्थान, डोकहर स्थान वा दुःखहर, जनकपुर, धनुषा, अहल्या स्थान, सीतामही वा सीतामढ़ी, महिसीक उग्रतारा, भैरव स्थान, महादेव स्थान, कुशेश्वर स्थान, विद्यापति नाथ महादेव आदि स्थान सिद्धिक दृष्टिसँ विशिष्ट महत्त्व रखैछ । उच्चैठमे जे दुर्गा स्थान अछि ओ ओएह सिद्धपीठ थिक जतय कालिदासकेँ विद्याक सिद्धि प्राप्त भेल छलनि । ओतय एकगोट स्थान कालिदास चौपाड़ि नामसँ विख्यात अछि । प्राचीन सरकारी खतियौनमे 'कालिदास चतुरपाठीकेँ उल्लेख भेटैछ । दुर्गापूजाक अवसर पर एखनहुँ ओतय साधना ओ सिद्धिक बहुविध रूप देखना जाइछ । एकर अतिरिक्त ओतय अनेक साधक ओ तपस्वी बरोबरि पहुँचैत रहैत छथि आ विशेष- रूपेँ साधना करैत छथि ।

कपिलेश्वर मिथिलाक प्राचीन तीर्थ थिक । एतय भीषण तपस्याक पश्चात् कपिलमुनि सिद्धि प्राप्त कयने छलाह । जनश्रुति अछि जे राजा जनक सेहो पूजा करबाक लेल एतय अबैत छलाह। किछु गोटाक कहब छनि जे सतलखा गाममे हुनक राजधानी छलनि । कपिलेश्वर एतएसँ बेश निकट आछि । किछु समयक पश्चात् हुनक राजधानी सतलखासँ उठि कऽ जनकपुर चल गेलनि। कपिलेश्वर स्थानमे सुदूरसँ तपस्वी एवं मनस्वी लोकनि आबि अनेक प्रकारक साधना करैत छलाह। प्रतिवर्ष लाखो यात्री एतय आबि महादेवक पूजा करैत छथि । लोकक एहन विश्वास छनि जे शुद्ध मोनसँ जे कोनो कामना लऽ कऽ एतय लोक अबैत अछि ओ ओकरा निश्चित फलित भऽ जाइत छैक ।

'नचारी' आ महेशबानी' जेहन कपिलेश्वर स्थानमे सुनबामे आओत से अन्यत्र दुर्लभ । असंख्य कण्ठसँ 'कखन हरब दु:ख मोर हे भोला नाथ, शिव उतरब पार कओन विधि' आदि ध्वनि सुनबामे आओत । भक्त लोकनिक एहि स्वरमे हार्दिक विह्वलता अनायास आकृष्ट कऽ लेत । रवि आ सोमकेँ एतय बेसी भीड़ । रविकेँ पुरुषक संख्या आ सोमकेँ नारीक संख्या अधिक रहैछ । एतय भगवान् शंकरक मुख्य मन्दिरक सोझा भगवती पार्वतीक सेहो वेस पैघ मन्दिर छनि । एकटा मन्दिर हनुमान जीक से बनल अछि । एकर अतिरिक्त मन्दिरक कातमे आर कतेको देवी-देवताक मूर्ति सभ सुप्रतिष्ठित छनि । वयोवृद्ध लोकनिक मुँहसँ ई सुनबामे अबैछ जे एतय एक-दू नहि अनेको सिद्ध भऽ चुकलाह अछि । हुनका लोकनिक दर्शन मात्रसँ लोकक क्लेश दूर भऽ जाइत छलैक। साधनाक लेल ई स्थान बड़ प्रसिद्ध रहल अछि ।

जनकपुर विदेहक साधना-भूमि रहलनि अछि । एही भू-भागमे रहि ओ संसार एवं संयासकेँ एक संग उपस्थित करबामे समर्थ भेल छलाह । एतय लगभग तीस कोसक क्षेत्रमे अगणित साधना स्थली छलैक जतय अनेक साधक लोकनि सिद्धि प्राप्त करैत छलाह । धनुषा जनकपुरसँ पाँच कोस उत्तर एकगोट विशिष्ट स्थान थिक । कहबी छैक जे श्री रामचन्द्र जी द्वारा तोड़ल गेल धनुषक एकगोट अंश एतहि आबि कऽ खसल छल । एकांतक दृष्टिसँ एखनहुँ ई स्थान साधनाक लेल उपयुक्त देखना जाइछ । प्राचीन कालमे एतय साधक सभकेँ एक-सँ-एक महान् फल प्राप्त भेल छलनि । सीतामही अर्थात् सीतामढ़ी मिथिलाक एकटा प्राचीन सिद्धपीठ थिक । जानकी जीक जन्म एतहि भेल छलनि जतय भक्त लोकनि साधना करैत छथि ।

भावानीपुरमे महाकवि विद्यापति संस्थापित महादेवक स्थान बेस प्रसिद्ध भऽ गेल अछि । हजारक-हजार संख्यामे लोक शिवरात्रि दिन पायरे गंगाजल लऽ पहुँचैत अछि आ ओहि सिद्ध स्थलक संस्पर्शसँ अपन आध्यात्मिक उन्नयन करैत अछि ।

सौराठ महादेव सेहो प्रसिद्ध छथि । ई ओएह स्थल थिक जतय विवाहार्थी व्यक्ति सभ जुटैत छथि आ ओ सौराठ सभा नामसँ विशेष चर्चित अछि । मिथिलामे ई गाम अति प्रसिद्ध अछि। एतय

कतेको सिद्ध तपस्वी भेल छथि । एखनहुँ सिद्धजीक उक्ति लोक-जीवनमे प्रचलित-प्रसरित अछि।

अहल्या स्थानक अपन विशेष महत्त्व छैक । एहि स्थानक महिमा एखनहुँ देखल जाइछ । ऐला रोगसँ ग्रस्त जे व्यक्ति भाँटाक भार लऽ कऽ' पहुँचैत छथि तँ हुनकर ओ रोग निश्चित रूपसँ दूर भऽ जाइत छनि । ई ओ स्थान थिक जतय भगवान श्री रामचन्द्रजी अहल्याक उद्धार कयने छलाह । ई एकटा महान् तीर्थ-स्थल बनि चुकल अछि आ मनोवांछित फल प्राप्तिक दृष्टिसँ एकर अपन महत्त्व छैक ।

प्रसिद्ध सिद्ध-स्थलमे भैरव स्थानक गणना विशेष रूपमे कयल जाइछ । मिथिलाक महत्ताक वर्णनमे एकर उल्लेख कयल जाइछ । ई कोठिया (मधुबनी) मे अछि । एतय भैरवक लिंग सनातनसँ छैक आ साधक लोकनि एतय एक-सँ-एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त कयने छथि ।

शिव तीर्थक रूपमे कुशेश्वर स्थान सेहो बड़ प्रसिद्ध अछि । एहि भूमिक स्पर्श मात्रसँ लोक परम कल्याणकेँ प्राप्त कऽ लैछ । तहिना सहरसा (वर्तमानमे मधेपुरा) जिलाक सिंहेश्वर स्थानक क्षेत्र परम पवित्र अछि । कौशिकीक प्रचण्ड धार कए वर्ष धरि मन्दिरक सटि कऽ बहैत छल, किन्तु ई मन्दिर यथावत रहल ।

सिद्धिक दृष्टिसँ उग्रतारा स्थानक बड़ महत्त्व छैक । मिथिलामे शक्ति उपासना पर बेसी बल देल गेलैक अछि । तहिना मुक्तेश्वर स्थान, विदेश्वर, जलेश्वर, भुवनेश्वर, सिद्धेश्वर नाथ, गिरिजा, वाणेश्वरी, सिद्धेश्वरी आ कलना स्थान सेहो प्रसिद्ध सिद्ध स्थल अछि ।

'दुःखहर स्थान' विष्णुपुर (नाजिरपुर)-बेलाही ग्रामक समीप चन्द्रभागा नदीक तटपर अवस्थित अछि । एतऽ सँ जनकपुर लगभग 35 किलोमीटर उत्तर एवं मधुबनी 7 किलोमीटर दक्षिण छैक । मधुबनीसँ सोझे कलुआही (जयनगर) जे पक्की सड़क गेलैक अछि ओकर मध्यसँ एकटा सड़क दुःखहर स्थान तक जाइत छैक । पचास वर्ष पूर्वधरि ओकर चारुकात वेस जंगलाह छलैक । साधके रहबाक साहस करैत छलाह । एहू ठामक नदीक छारनिमे ओ पोखरि सभमे कमल आ भँट बड़ फुलाइक । दस वर्ष पूर्व धरि चारूकात फूलेफूल देखना जाइत छलैक । ओकर किछु अवशेष एखनो देखबामे अबैत छैक । एतऽ जे केओ शुद्ध मोनसँ गौरी शंकरक पूजन अर्चन

करैत अछि से मनोवाञ्छित फल अवश्य पबैत अछि । गौरी शंकरक प्रतिमाक स्थापना वेदकालेसँ मानल जाइत छैक । राजा जनकक समयमे ई स्थान बड़ प्रसिद्ध छल । कहल जाइत छैक जे राजा जनक शक्ति-पूजाक लेल एहि पवित्र स्थानकेँ विशेष महत्त्व देथि ।

शिवरात्रि, मकर संक्रान्ति, दुर्गापूजा आदिक अवसरपर सुदूरसँ तीर्थयात्री लोकनि दुःखहर स्थान अबैत छथि । एहि ठामक वातावरण पूर्ण शान्त एवं परम पवित्र छैक । ईश चिन्तनक आ साधनाक लेल ई स्थान सरिपहुँ बड़ उपयुक्त अछि । एतय एक गोट यज्ञशाला छैक जाहिमे निरन्तर जन-कल्याणार्थ यज्ञक आयोजन होइत रहैत छैक । राज-राजेश्वरी भगवतीक मन्दिरमे गौरी शंकरक जे युग्मरूप एतऽ सुप्रतिष्ठित अछि ओ सम्पूर्ण देशमे आर कतहु नहि देखना जाइछ । एतऽ अयलासँ गौरी शंकरक कृपासँ सभक दुःख दूर भऽ जाइत छैक तेँ ई स्थान "दुःखहर" नामसँ सुप्रसिद्ध भऽ गेल अछि ।

– सीताराम झा 'श्याम'

प्रश्न ओ अभ्यास

पाठसँ

1. मिथिलाक प्रमुख तीर्थ स्थानक नाम लिखू ।
2. कपिलेश्वर स्थान किएक प्रसिद्ध अछि ?
3. जनकपुर किनक साधना भूमि अछि, एहि स्थानक की महत्त्व अछि ?
4. सौराठ सभा किएक प्रसिद्ध अछि ?
5. भगवान रामचन्द्रजी अहल्याक उद्धार कतय केने छलाह ?
6. कुशेश्वर स्थानक विशेषता की अछि ?

पाठसँ आगू

1. मिथिलामे शक्तिक उपासना पर बेसी बल किएक देल गेल अछि?
2. मनोवांछित फल भेटबाक लेल लोक कतय जाइत अछि ?

अनुमान आ कल्पना

1. मिथिलाक तीर्थस्थलक विकास हेतु अपन सुझाव दिअ ।
2. जनकपुर धामक महत्त्व पर अपन विचार प्रकट करू ।
3. विद्यापतिक जीवन पर प्रकाश दिअ ।

भाषा अध्ययन

1. पाठसँ पाँच गोट विशेषण शब्द चुनि कऽ वाक्यमे प्रयोग करू ।
2. विपरीतार्थक शब्द लिखू

   सुख, उज्जर, प्राचीन, देव, निश्चित ।
3. लोककेँ, लोकसँ, लोकक लेल, लोकक आ लोकमे एहि पदसभमे क्रमशः कर्म, करण, सम्प्रदान, सम्बन्ध आ अधिकरण कारक चिह्न लागल अछि । कारक चिह्न लगयलाक उपरान्त शब्दक प्रयोग वाक्यमे होइत अछि । निम्न शब्दमे कारक चिह्न लगाउ- जनक, मिथिला, भारत, पटना, नेना, साधक, भक्त ।

शब्दार्थ

अन्यत्र	–	आनठाम
प्राचीन	–	पुरान
साधना	–	तपस्या

तपस्वी	–	तपस्या कयनिहार
तीर्थ	–	पुण्य धाम
असंख्य	–	अगणित
दुर्लभ	–	जे सहजहि प्राप्त नहि हो
जनश्रुति	–	लोकक कहल
यात्री	–	यात्रा कयनिहार

●

7

वन ओ वनस्पति

–'मीत ! कतेक कालसँ अहाँक बाट तकैत आँखि पथरा गेल । धीया-पूता कहलक जे नहाय गेलाह अछि, आब आबिते होयताह, हमरा लोकनि तँ एतेक कालमे सौंसे पोखरिकेँ उपछि कऽ उड़ाहि देने रहितिऐक । अहाँ की करऽ लगलहुँ जे पहर बीति गेल?' रासलाल अपन लङोटिया संगी गोविन्दकेँ दलान परक चौकी पर बैसले-बैसले कहलथिन ।

गोविन्द अपना मित्रक गप्प सूनि उत्तर देलथिन – अहाँकेँ जहियासँ मोटर हाँकब छुटि गेल अछि, तहियासँ प्राय: बैसल-बैसल गप्पेटा हँकैत छी । ठीके अछि, मोटरमे पेट्रोलो भरऽ पड़ैत छल होयत आ गप्पमे तँ पानिओ नहि । अहाँकेँ बूझल अछि जे पहर तीन घंटाक होइत छैक ? आइ-काल्हि साढ़े छओ बजे सूर्योदय होइत छैक आ एखन आठे बजलैक अछि । हम सब दिन अन्हरोखे उठैत छी । बथान परक छाउड़ गोबर उठा एक पथियामे लऽ बाध दिस चल जाइत छी। ओम्हरे दतमनि कऽ स्नान कयने चल अबैत छी । तखनसँ हर-जन, खेती-पथारीमे लागि जाइत छी । आइ शनि थिकैक तेँ कनेक पीपरमे पानि ढारऽ चल गेलहुँ । दस मिनट तेँ बेसी समय लागि गेल । एतबा समय सब शनि केँ लगैत अछि । तैयो एखन आठे बजलैक अछि, तखन अहाँकेँ पहर कोना बीति गेल ?

रासलाल चौल कयलथिन – पीपरमे पानि ढारब, ई मौगियाही चालि अहाँकेँ के सिखा देलक?

– 'पीपरमे पानि ढारब मौगियाही चालि भेलैक, ई ज्ञान अहाँकेँ कतऽ भेल ? एतबा कहि गोविन्द आँखि गड़ा कऽ रासलाल दिस ताकऽ लगलथिन ।

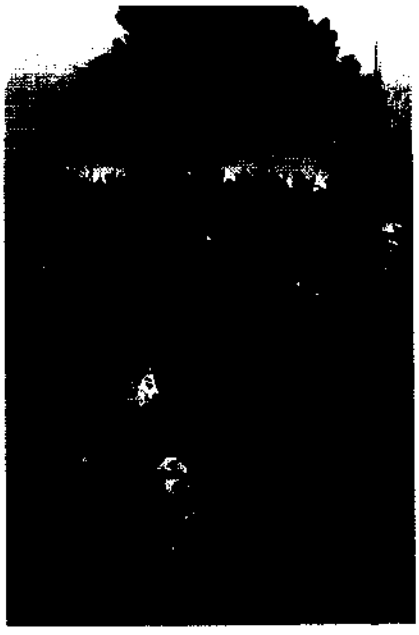

रासलाल गोविन्दकेँ ओना तकैत देखि मुसकिया कऽ कहलथिन – ई पीपर तँ फल कहाँसँ देत, जारनियोक काजमे नहि अबैत अछि । जँ पानिए ढारबाक हो तँ आम, जामुन, कटहर, बड़हर, नेबो, सरीफा आदिक गाछमे ढारू जाहिसँ फलो भेटत । आ पीपरमे पानि ..... ई शुद्ध कऽ मौगियाही बात भेल । एहि वैज्ञानिक प्रगतियोक युगमे तँ एहि अन्धविश्वास सबसँ बाहर होउ ।

गोविन्द कहलथिन – अपना समाजमे अन्धविश्वास नहि छैक, से हम नहि मानैत छी, मुदा बिनु विचार कयने सब बातकेँ अन्धविश्वास मानि लेब अज्ञानता थिक । अहाँकेँ एहि कथनसँ हमरा बुझाइत अछि जे अहाँकेँ वनक महत्त्वसँ कोनो परिचय नहि अछि। जँ अहाँ दस मिनट समय खर्च करी तँ आइ हम अपन काज छोड़ि अहाँकेँ आँखिक पट्टी फोलि दी । बाजू अछि समय ?

रासलाल कहलथिन – जँ चाह पिया दी तँ दस मिनटक बदला बीसो मिनट समय देबालेल तैयार छी ।

गोविन्द बजलाह – चाहे टा नहि पिआयब पनपिआइओ करायब मुदा आइ हमरा सभक जीवनमे वन ओ वनस्पतिक केहन महत्त्वपूर्ण स्थान अछि, तकर जानकारी अवश्य प्राप्त कऽ लियऽ। असलमे हमरा लोकनिकेँ स्वार्थक तेहन चश्मा आँखि पर पड़ि गेल अछि जाहिमे सद्यः फल देखबामे अबैत अछि, तकरे टा मोजर दैत छिऐक । दूरवर्ती लाभ दिस नजरि जाइते ने अछि। अन्धविश्वास कहि कऽ नीको बातकेँ नकारि दैत छिऐक ।

एतबा कहि गोविन्द आङन चल गेलाह । किछु जलखै आ चाहक ओरिआओन करऽ कहि, पुनः दलानक चौकी पर आबि रासलालक लग बैसि कहऽ लगलथिन – जँ वन नहि तँ संस्कृति ओ साहित्य नहि, वन नहि तँ स्वास्थ्य ओ सौन्दर्य नहि, वन नहि तँ उपजा–बाड़ी नहि । कतेक कहू, वन नहि तँ जीवन नहि ।

रासलाल कहलथिन – कनेक ई बात फड़िछा कऽ बुझा दियऽ ।

गोविन्द – पहिने कहू तँ अपना देशक नाम की थिक ?

रासलाल – बुझाइत अछि जे आइ अहाँ हमरा अपन चटिया बनबऽ चाहैत छी । अपना देशक नाम भारत सेहो नहि बूझल रहत ?

गोविन्द – जा धरि लोक चटिया नहि बनैत अछि ता धरि ज्ञानमे बृद्धि नहि होइत छैक । तैं ई कहू जे एहि देशक नाम भारत किएक पड़लैक ?

रासलाल – सुनल अछि जे पुरूवंशमे दुष्यन्त नामक राजा छलाह । कण्व ऋषिक आश्रममे पालित शकुन्तला नामक एक कन्या छलीह । ओ अप्सराक बेटी छलीह । तनिके संग दुष्यन्त विवाह कयने छलाह । ओहि शकुन्तलासँ उत्पन्न भेलथिन भरत नामक पुत्र । भरत बड़ पराक्रमी भेलाह । हुनकहि नाम पर एहि देशक नाम भारत पड़लैक ।

गोविन्द – अहाँ तेजगर चटिया बहरयलहुँ । प्रश्नक उत्तर फर्र–फर्र देने जाइत छी ।

रासलाल – हमरा आब बेसी चेथाडू नहि, जे सब बुझयबाक हो से सबटा बुझा दियऽ ।

गोविन्द एकसूँ कहऽ लगलथिन – जाहि शकुन्तला ओ भरतक नाम लेल अछि, दुनूक जन्म वनेमे भेल छलनि । तैं हमर इतिहास वनहिसँ आरम्भ होइत अछि ।

वेद हो वा उपनिषद, रामायण हो वा महाभारत । सर्वत्र वनक महिमा अछि । ऋषि-मुनि लोकनि वनहिमे कुटी बनाय निवास करैत छलाह । ज्ञान केन्द्र गुरूकुल एही वनक शान्त एकान्त स्थानमे होइत छल जाहि ठाम मनुष्यकेँ मानव धर्मक शिक्षा देल जाइत छलैक । सब सुखी हो, सम्पूर्ण वसुधे अपन कुटुम्ब थिक, परोपकारसँ पुण्य ओ दोसरकेँ दुख देबामे पाप, एहने एहन पाठ पढ़ाओल जाइत छलैक ।

मर्यादा पुरूषोत्तम राम वनवासेमे रहि आततायी रावणक विनाश कयने छलाह । वाल्मीकि वनेमे रहि रामायणक रचना कयने छलाह । ओहि रामायणमे स्वतन्त्र रूपेँ एक अरण्य काण्ड अछि। जीवनक उत्तरार्द्धमे जगन्माता जानकी वाल्मीकिक आश्रममे लव-कुशक जन्म देने छलीह । महाभारतक अठारह पर्वमे एकटा वनपर्व सेहो अछि ।

संस्कृत भाषा हो अथवा लोकभाषा, यदि वृन्दावन-बिहारी श्रीकृष्णक लीलावर्णनकेँ ओहि साहित्यसँ काछि कऽ बाहर कऽ देल जाय तँ सम्पूर्ण साहित्य खुक्ख भऽ जायत। एहि तरहेँ कहि सकैत छी जे वन नहि तँ संस्कृति ओ साहित्य नहि ।

एखनहु अपना देशक वनवासी बन्धुलोकनि प्रकृतिक उन्मुक्त आङनमे निवास करैत शुद्ध अन्तःकरणसँ देशक प्रति निश्छल प्रेम रखैत छथि । स्वतन्त्रता संग्राममे हिनका लोकनिक अनुपम योगदान ओ शौर्यगाथासँ इतिहासक पृष्ठ जगमगा रहल अछि ।

रासलाल बाजि उठलाह- मीत, आरो कहू । सुनबामे बड़ रूचिगर लगैत अछि । स्वास्थ्यसँ वनक कोन सम्बन्ध छैक ।

गोविन्द- सबसँ पहिल बात तँ ई जे हमरा अहाँकेँ अर्थात् जीवमात्रकेँ जीवन धारण करबाक हेतु सबसँ पहिल आवश्यक वस्तु थिक ऑक्सीजन । एकरा बिना पाँचो मिनट एहि शरीरमे प्राण नहि रहि सकैत अछि । हमरा लोकनि श्वास-प्रश्वास प्रक्रियामे वायुमण्डलसँ ऑक्सीजन ग्रहण करैत छी जे भीतर जाय कार्बन डायक्साइडमे बदलि कऽ बाहर होइत अछि । प्रकृतिक विचित्रता देखियौक जे ई वृक्ष-समुदाय कार्बन डायक्साइड ग्रहण करैत अछि आ ओकरा ऑक्सीजनमे बदलि कऽ छोड़ैत अछि । अरबो लोक राति दिन ऑक्सीजन सोखैत रहैत अछि तैयो ई वृक्ष सब ओकरा सठऽ नहि दैत अछि । तँ कहल जा सकैत अछि जे जँ वन नहि रहय तँ हमरा सबकेँ प्राणरक्षा करब असम्भव भऽ जायत ।

दोसर बात, हमरा सभक अपन भारतीय चिकित्सा शास्त्र थिक आयुर्वेद । एहि आयुर्वेदमे वनस्पतिक मानक गुण-दोषक परीक्षण कयलाक बाद ओकरा सभक वर्णन कयल गेल अछि । आयुर्वेद जे रोगक निदान करैत अछि, ताहि रोग सभक औषधिक हेतु जड़ी-बूटी एहि वनसँ उपलब्ध होइत अछि । जहिना-जहिना हम सब वनक महत्त्वकेँ बिसरल जाइत छी, तहिना-तहिना वनक क्रमिक ह्रास भेल जा रहल अछि । जहिना-जहिना वनक ह्रास भेल जाइत अछि हम सब दिव्य औषधि सबसँ वंचित होइत विदेशी औषधिक दास भेल जा रहल छी । ओना विदेशोसँ जे औषधि अबैत अछि अथवा अपनो देशमे विदेशी पद्धतिसँ जे औषधि बनैति अछि ताहू सभक हेतु अक्षय भण्डार एही वनमे सुरक्षित अछि ।

रासलाल – मीत, आइ अहाँ बहुत गूढ़-गूढ़ बातक ज्ञान देलहुँ अछि । एहिसँ पहिने एतेक बात नहि बूझल छल ।

गोविन्द– एखन की भेल अछि, किछु आरो सुनू । एक दिस संसार कल-कारखाना बनौने जा रहल अछि । धरतीक गर्भसँ, कोयला, गैस, पेट्रोल, तेल आदि पदार्थ बाहर कऽ फुकने जा रहल अछि । एहि सबसँ वायुमण्डल प्रदूषणसँ आक्रान्त भेल जा रहल अछि आ दोसर दिस ई मानव समाज वनक निर्ममता पूर्वक संहार कयने जा रहल अछि। जाहिसँ वायुमण्डल शुद्ध होइत, तकर चिन्ता अज्ञानतावश मनुष्य नहि कऽ रहल अछि। तकरे कुपरिणाम थिक जे नाना प्रकारक रोग-व्याधिक प्रसार भऽ रहल अछि । एहि स्थितिसँ संसारक वैज्ञानिक लोकनिक संग विभिन्न देशक सरकारो सब परम चिन्तित अछि ।

रासलाल– तखन तँ एकर उपाय जल्दीसँ जल्दी होयबाक चाही ।

गोविन्द- देखू मीत ! अपना सभक ओहि ठाम रौदी, अकाल अधिकतर भऽ जाइत अछि। धरतीक उर्वरा शक्ति घटल जा रहल छैक । उपजामे ह्रास भेल जा रहल छैक । एकरहु कारण वनक कमी सैह थिक । वर्षाक आधार सेहो वने थिकैक । तहिना बाढ़िसँ रक्षा सेहो वन करैत अछि आ धरतीक उर्वरा शक्तिकेँ बढ़बितो छैक । तँ अपना देशमे वन महोत्सवक आयोजन कऽ वृक्ष-रोपणक हेतु लोककेँ प्रोत्साहित कयल जाइत छैक । संगहि बँचल-खुचल वनक सुरक्षा कड़ाइसँ करबाक चेष्टा भऽ रहल अछि । नव-नव वन लगयबाक प्रयास भऽ रहल अछि ।

रासलाल– आइ जँ पीपरमे पानि ढारबाक गप्प अहाँसँ नहि होइत तँ एतेक बात हम कोना बुझितहुँ ?

गोविन्द– अहाँ पीपरमे पानि ढारबकेँ मौगियाही बात कहलहुँ तँ ताहू प्रसंग किछु आरो सुनि लियऽ । किछु वृक्ष हमरा लोकनिकेँ फल दैत अछि, किछु वृक्ष अपन छायासँ प्राणीक उपकार करैत अछि । किछु वृक्षक पाते तँ किछु वृक्षक छाले उपयोगी होइत अछि। सबसँ अधिक उपकार घरक निर्माणमे करैत अछि । खाम्ह–खम्हेली, कोड़ो–बाती, धरनि–कड़ी, केबाड़–खिड़की, खाट–चौकी, कुर्सी–टेबुल, रैक–आलमारी आदि विभिन्न सुख–सुविधाक उपकरण एही वनसँ प्राप्त होइत अछि। एही वन ओ वनस्पतिक फल, फूल, पात, छाल, सीर, धड़ कोनो अंग नहि छैक जे हमरा अहाँक उपयोगमे नहि अबैत हो । इहो बात स्मरण रखबाक चाही जे जहिया एहि धरतीक उत्पत्ति भेलैक तहिया सबसँ पहिने गाछ–वृक्ष, लता–गुल्म, घास–फूस यैह सब उत्पन्न भेल । अतः वन मानव–समाजेक नहि प्राणीमात्रक अग्रज थिक । अपन अग्रज अर्थात् जेठक प्रति जे आदर होयबाक चाही, सैह आदर हमरा लोकनिकेँ वनक प्रति रखबाक चाही । पीपर तँ एक प्रतीक भेल

एहिना विभिन्न प्रकारक गाछ- वृक्षक समूह जाहि ठाम रहैत छैक, तकरे वन कहल जाइत छैक। वनक एक-एक झाड़ झंखाड़ अपनामे अपन विशिष्ट गुणकेँ सुरक्षित रखने अछि । अत: एकर संरक्षण ओ संवर्द्धन हमरा लोकनिक पुनीत कर्त्तव्य थिक ।

तावत् आङनसँ मकैक रोटी पर खजबा कटहरक को तथा आमक कुच्चा अँचार आबि गेलनि । दुनू मित्र पनपिआइ कयलनि । रासलाल पनपिआइओ करथि आ मनहि मन सोचबो करथि जे प्रतिवर्ष जँ दुइओ टा कऽ गाछ रोपब आ ओकर सेवा करबैक तँ अपना जे लाभ होयत से होयबे करत, संगहि देश-समाजक सेहो उपकार होयतैक । तँ ई काज अवश्य करब आ सीसो, चह, जामुन, गम्हारि सेहो सब लगा देबैक जाहिसँ अगिलो पुस्त गुण गबैत रहत ।

- चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

प्रश्न ओ अभ्यास

पाठसँ

1. गोविन्द रासलालक के छलाह ?
2. गोविन्दक दिनचर्या की छलनि ?
3. गोविन्द स्वास्थ्यसँ वनक की सम्बन्ध बतओलनि अछि ?
4. वन नहि तँ जीवन नहि, एहि कथनक अर्थ पठित पाठक आधार पर लिखू।
5. 'वन नहि तँ संस्कृति आओर साहित्य नहि' कथनकेँ पाठक आधार पर स्पष्ट करू ।

पाठसँ आगू

1. घरक निर्माणमे वनसँ की सब उपलब्ध होइत अछि ?
2. वनसँ की-की लाभ होइत अछि ?
3. वनक विनाशसँ की प्रभाव पड़ैत अछि ?

अनुमान आ कल्पना

1. अपना सभक भूमिमे कोन-कोन गाछ लगयबाक चाही जाहिसँ अगिला पुस्तकेँ लाभ भेटि सकैछ ।
2. वनक एक-एक झाड़-झंखाड़ अपनामे अपन विशिष्ट गुणकेँ सुरक्षित रखने अछि । एहि गुणकेँ वर्गमे चर्चा करू

भाषा-अध्ययन

1. पाठसँ विशेषण शब्द चुनि वाक्यमे प्रयोग करू
2. विपरीतार्थक शब्द लिखू -

   राजा, बेटी, जन्म, सुखी, शुद्ध

3. धीया-पुता, आइ-काल्हि आदि शब्द युग्म थिक । पाठमे प्रयुक्त पाँचटा शब्द-युग्मकेँ चुनिकऽ अपना वाक्यमे प्रयोग करू ।

शब्दार्थ

वनस्पति - फूलविहीन गाछ ।

स्वार्थ - अपन लाभ

अन्धविश्वास - बिनु विचारनहि कोनो वस्तु वा विषय पर विश्वास करब।

पराक्रमी - पराक्रम सँ युक्त ।

परोपकार - एहन काज जाहिसँ आनक हित हो ।

परीक्षण – जाँच, मूल्यांकन ।

अक्षय – जकर नाश नहि हो

गूढ़ – कठिन, नुकायल

आक्रान्त – भयभीत

ह्रास – कमब, घटब

गुल्म – झाड़ वा बीटबला वृक्ष, जेना–धान

●

8

की थिक मिथिला

की थिक मिथिला ?
के छथि मैथिल ?
हम कहइत छी ओरहि सँ
मिथिलाबासी सुनह पिहानी
हम कहइत छी तोरहि सँ ।

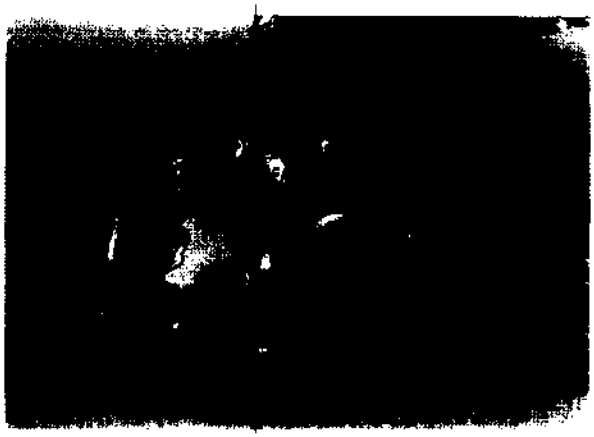

आङन-आङन एतहि गोसाउनि
विष्णु बसल छथि झोरी मे
त्रिभुवन पति बान्हल छथि अजगुत
प्रेमक पातर सन डोरी मे

बमभोलाकेर दर्शन होइछ
गीतक भास नचारी मे
उत्पाती लछमी छथि मूनलि
कोठी आओर बखारी मे

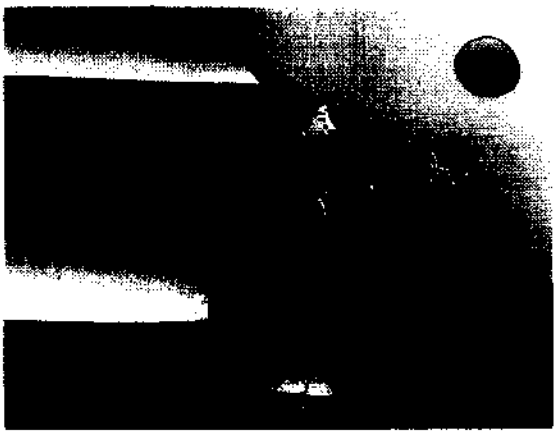

सुरुज उगइ छथि बाँसक दोगँ
साँझ ढरैतछि बाड़ी मे
तुलसी दलकेर पूजक छी हम ।
दीप सजाबी थारी मे

साँझ-परते गाय-मालकेर
घंटी बाजय टुनुर - टुनुर
सौ-सौ राधाकेर पग बाजय
काड़ा-छाड़ा झुनुर- झुनुर

जन्मक पाबनि सोहर गाबथि
होरिलाकेर मुख चूमि कऽ
बाट चलथि 'बटगवनी' गाबथि
मैथिल ललना झूमि कऽ

से थिक मिथिला आ हम मैथिल
से कहइत छी जोरहि सँ
स्वर्ग तुच्छ अछि हम कहि देलहुँ
अपना माइक कोरहि सँ

- रवीन्द्र नाथ ठाकुर

प्रश्न ओ अभ्यास

कवितासँ

1. एहि कविताक आधार पर मिथिलाक विशेषताक वर्णन करू ।
2. मैथिलक विषयमे कवि की कहलनि अछि ?
3. जन्मक अवसर पर कोन गीत गाओल जाइत अछि ?
4. 'स्वर्ग तुच्छ अछि हम कहि देलहुँ ।' अपना माइक कोरहिसँ । 'एहि पाँतीक भाव स्पष्ट करू ।

निम्न पद्यांशक छूटल अंश लिखू :-

आङन - आङन एतहि .....

विष्णु ..... छथि झोरी मे

त्रिभुवन पति बान्हल छथि .....

प्रेमक पातर सन .....

कवितासँ आगू

1. 'की थिक मिथिला' कवितामे वर्णित मिथिलाक वर्णन संक्षेप मे करू ।
2. कविताक आशय लिखू ।

अनुमान आ कल्पना

1. मिथिला कथीक लेल प्रसिद्ध अछि ?
2. मिथिलाक कोनो दू विभूतिक जीवनी वर्गमे सुनाउ ।

भाषा-अध्ययन

1. निम्न शब्दसँ वाक्य बनाउ :-

   पिहानी, प्रेम, दीप, पावनि, स्वर्ग

2. निम्नलिखित शब्द सँ विशेषण बनाउ :-

भारत, ग्राम, भूत, इतिहास, प्रेम ।

शब्दार्थ

मिथिला – मैथिल जनपद (जतय मैथिली भाषा बाजल जाइत अछि)

मैथिल – मिथिलावासी

पिहानी – जकर अर्थ फड़िछायल नहि हो, बुझौअलि

गोसाउनि – भगवती

अजगुत – आश्चर्यजनक

●

9

राजगृह आ नालन्दा

पटनासँ लगभग 80 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व अवस्थित राजगृह प्राचीनकालसँ एकटा अत्यन्त पुण्य क्षेत्रक रूपमे विख्यात रहल अछि । एहि स्थानक महात्म्य तँ अहीसँ जानल जा सकैछ जे मलेमासमे छत्तीस करोड़ देवता एतहि आश्रय ग्रहण करैत छथि । तँ एहि समयमे एतय बड़का भारी 'मलेमास मेला' लगैत छैक जाहिमे देशक सभ भागक लोकसभ सम्मिलित होइत छथि । पटनासँ राजगृह जयबाक लेल रेलगाड़ी, बस, टैक्सी सभ उपलब्ध छैक । बससँ यात्रा कयलासँ समयक संग-संग पाइ सेहो कम लगैछ ।

जेना कि नामहिसँ स्पष्ट भऽ जाइछ 'राजगृह' राजा लोकनिक निवास स्थल रहलनि अछि। बहुत दिन धरि एहि स्थानकेँ राजधानी होयबाक गौरब सेहो प्राप्त भेल छैक । रामायणकालमे ई 'वसुमती' नामसँ प्रसिद्ध छल तँ महाभारत कालमे एकरा 'गिरिव्रज' कहल जाइत छलैक । बृहद् खंडपुर आ कुशाग्रपुरसंज्ञासँ सेहो ई अभिहित भेल छल । बृहद् खण्डपुर नाम राजा बृहद्रथक देल बुझि पड़ैछ । ज्ञातव्य जे वृहद्रथ जरासंधक पूर्वज मानल जाइत छथि । वृहद्रथक पश्चात् राजा कुशाग्र एतहुक शासन-भारसँभारने रहथि । संभवत: तँ एकरा कुशाग्रपुर सेहो कहल गेलैक । दोसर बात ई जे एतय कुश बड़ होइत छलैक । सुगंधित कुश, जकरा खस कहि सकैत छिऐक, एतय बहुत होइत छलैक तकर प्रमाण कतेको बौद्ध-जैन ग्रंथमे उपलब्ध होइछ आ ह्वेनसांगक यात्रा-वृत्तान्तसँ सेहो एहि बातक पुष्टि भऽ जाइछ । जहाँधरि गिरिव्रज नामक प्रश्न अछि, जरासंध एतहि भीमसँ मल्लयुद्ध करबाकाल प्राण त्याग कयने छलाह । महाभारतक अनुसार कंस जरासंधक जमाय छलथिन । तँ जखन कंस-बध भेलैक तँ जरासंध मथुरा पर आक्रमण कऽ देने छलथिन । अजात-शत्रु आ हुनक पुत्र वैशालीसँ सम्पर्क स्थापित कयलाक बाद राजगृहकेँ छोड़ि पाटलिपुत्रमे राजधानी स्थापित कयलनि।

सम्प्रति राजगृहमे अनेक दर्शनीय स्थान छैक । जेना, रणभूमि, अजातशत्रु-स्तूप, महादेव मन्दिर, जैन मन्दिर, देवदत्त समाधि आदि । रज्जु मार्गसँ जापानी मन्दिर धरि जायब आयब आसान भऽ गेलैक अछि । पर्यटक लेल सभसँ पैघ आकर्षणक केन्द्र छैक एतुक्का 'सप्तधारा' आ 'ब्रह्मकुण्ड' । ओना तँ सभ मासमे परन्तु विशेषत: जाड़क ऋतुमे गर्मजलमे स्नान करबाक उद्देश्यसँ एतय नहि केवल अपना देशक विभिन्न भागक लोक एतय अबैत छथि अपितु विदेशी पर्यटक सेहो भारी संख्यामे अबैत-जाइत रहैत छथि । ब्रह्मकुण्डक गर्मजलमे स्नान कयलासँ चर्म रोग छुटि जाइत छैक । बहुत गोटे एहू लोभसँ राजगृह जाइत छथि । बहुत लोक रातिमे स्नान करैछ । हम गर्मी आ जाड़ दुनू मासमे एतय स्नान कयलहुँ अछि । आब तँ सरकारक दिससँ एतय बड़ नीक बङला बनि गेलैक अछि जतय कम खर्चमे आरामसँ किछु दिन रहल जा सकैछ ।

राजगृहमे गिरिक शोभा अपूर्व छैक । 'पीपल गुहा' सँ प्रारम्भ कऽ हम 'विप्राचल'क दर्शन करैत 'वैभार गिरि'क विभूति आ विस्तारक पर्यवेक्षण कयलहुँ । नीचासँ ऊपर धरि सुसज्जित सीढ़ी पर चलैत नर-नारीक विभिन्न रंगक पाँतीसँ बुझना जाइछ जेना सभ केओ स्वर्गक आमन्त्रण पर सोल्लास प्रस्थान कयने होथि । सीढ़ीक निर्माण पर्वतकेँ काटि कऽ भेलैक अछि जे सुविधाजनक छैक । नीचामे गिरिक मधुरगान तेहने वातावरणकेँ सुन्दर बनओने । दुनू कातमे विभिन्न प्रकारक पहाड़ी फल, झाड़ी आ लता जकरा देखैत ऊपर चढ़बामे सहचरीक भान होइछ । ज्योत्स्नाक झरीमे ओहि पर्वत पर घुमैत काल अलौकिक आनन्दक अनुभव होइत छैक । एहि पर्वत पर सर्वाधिक मन्दिरक स्थापना कयल गेल छैक । जैन-मन्दिरक बहुलता भेटत आ महादेवजीक मन्दिरक प्रमुखता । 'रत्नगिरि' आ 'उदयगिरि' पर सूर्योदयक दृश्य बड़ मनोहर लगैत छैक-जेना सूर्य भगवानक बालरूप नहुँ-नहुँ बढ़ैत पर्वत पर चढ़बाक प्रयास कऽ रहल हो । वस्तुतः सूर्योदयक शोभा समुद्रक कातमे आ पहाड़ परसँ सर्वाधिक सुन्दर रूपमे देखऽ मे अबैत छैक । राजगृहमे 'गुफा' सेहो द्रष्टव्य अछि । एकर निर्माण संभवतः अजातशत्रु कयने छलाह । अनुमान कयल गेलैक अछि जे पहिल बौद्धसभा एतहि भेल रहैक ।

राजगृहमे 'बिम्बसार-पथ', 'बिम्बसार निवास-स्थान', 'बुद्ध-निवास', 'रथ चिह्न', 'शंख लेख'- आदि स्थान विशेष रूपसँ देखबाक योग्य छैक । बिम्बसार-पथकेँ देखि ओहि कालक राजप्रासादक विस्तारक अनुमान लागि जा सकैत अछि जे ओ कोन तरहेँ आ कतेक विस्तृत छल होयतैक । विद्वान् आ ज्ञानीक आदर कतेक होइत छलैक एकर पता तँ अहीसँ चलैत अछि जे बिम्बसार बहुत फटकी अपना रथकेँ रोकबा पैदल यात्रा कऽ बुद्धक दर्शन करबाक हेतु गेल छलाह। रथक चिह्न स्पष्ट छैक आ बुझनागेल अछि जे रथ कतेक भारी छल होयतैक । रथक चिह्नक लगमे शंख लेख देखबामे अबैत छैक। लिपिक पता नहि चलि सकल-किछु अंश मिथिलाक्षर जकाँ आ किछु अंश पालि जकाँ बुझना जाइछ । शंखक आकार स्पष्ट छैक । आब सरकार राजगृहकेँ एक सुन्दर नगरकेँ रूपमे परिवर्तित करबाक योजना बना रहल अछि मुदा एखनुक प्राकृतिक सौन्दर्य अपूर्व छैक ।

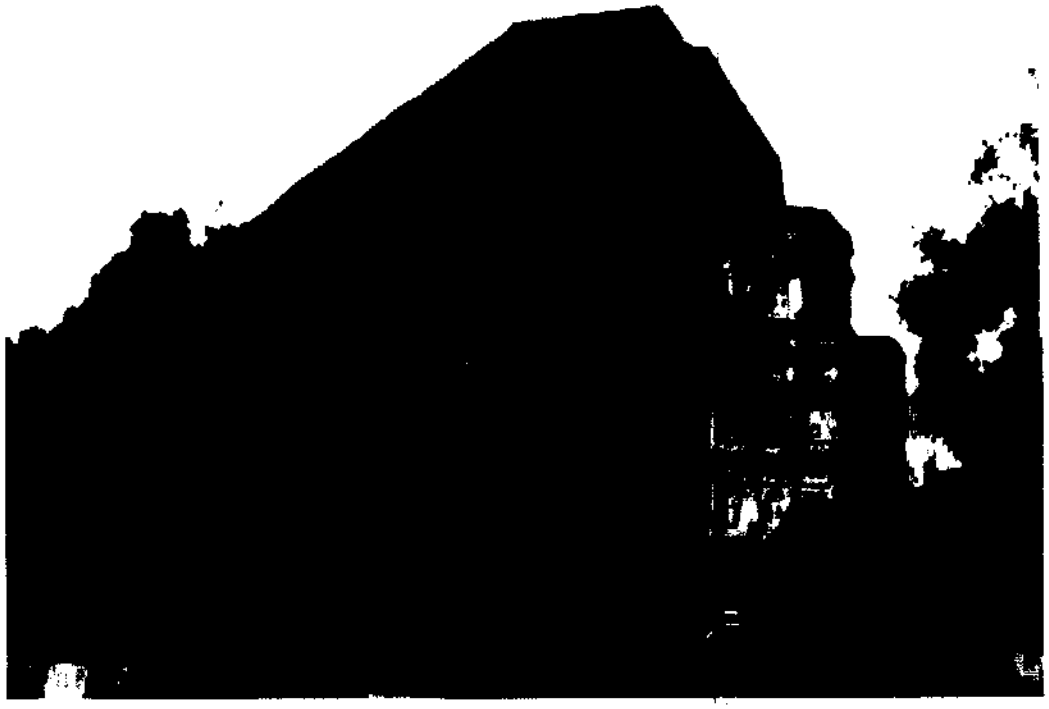

राजगृहक रमणीयताक अवलोकन कऽ हम सभ नालन्दा देखऽ अयलहुँ। विश्वविद्यालयक बाह्य भागकेँ देखि प्राचीन शिक्षा शास्त्री लोकनिक सूझिक पता चलैछ। सवितोन्मुख भवन, आ आगूमे विशाल वाटिका जतऽ पहुँचि ज्ञानाभाक दिव्य भान सहजेँ भऽ जाइत छैक। अन्दर जाकऽ देखलियैक तँ सभ छात्रक हेतु अलग-अलग आवासक प्रबन्ध, भोजनक सुव्यवस्था, अन्दरेमे विस्तृत सुन्दर सरोवर, मंदिर आदि जतऽ जा चित्त सहजेँ प्रसन्न भऽ जाइछ। विस्तृत वाचनालय, पैघ पुस्तकालय आ एक-एक विषयक लेल एक-एक सम्पन्न पुस्तकालय। रत्नसागर, रत्नांदधि आ रत्नभंजक पुस्तकालयक उल्लेख कतेक ठाम भेटैछ। ई सभ देखि-सुनि इएह कहऽ पड़ैत अछि जे ओतुक्का भूमि आ वातावरण सोनाक छल जतऽ हीराक उपजा होयब स्वाभाविक। विश्वविद्यालयक भव्य भवन विभिन्न शाखामे बाँटल बुझना जाइछ जाहिसँ ई अनुमान होइत अछि जे साहित्य, कला, विज्ञान, वाणिज्य आदिक प्रबन्ध फराक-फराक रहैक। बौद्धधर्म, दर्शन, इतिहास, आयुर्वेद, कला आदिक लेल तँ ई जगविख्यात रहल अछि। आइ जे विश्वविद्यालय सभ बनि रहल अछि तकर ने एहन नीक नक्सा बनैत छैक आ ने विषयक अनुसार ओकर रूपरेखा

स्थिर भऽ पबैत छैक । काशी हिन्दू विश्वविद्यालय किछु दृष्टिसँ आदर्श मानल जाइत अछि, परंच ओकर बनावटि सेहो एकरा समक्ष अत्यन्त गौण भऽ जाइछ । जे लोकनि कैम्ब्रिज आ आक्सफोर्डसँ भऽ आयल छथि सेहो नालन्दाक सुप्रबन्धक समक्ष ओकरा न्यून मानैत छथि । भगवानसँ प्रार्थना अछि जे हम सभ फेर नालन्दाकेँ पुनरूज्जीवित स्थितिमे देखि सकी । ओकर आत्मा एखनहुँ ओहि माटिसँ सटल छैक ।

– सीताराम झा 'श्याम'

प्रश्न ओ अभ्यास

पाठसँ

1. राजगृहमे 'मलेमास मेला' किए लगैत अछि ?
2. राजगृह नाम सँ की स्पष्ट होइत छैक ?
3. जरासंध मथुरा पर आक्रमण किएक कयने छलाह ?
4. रज्जु मार्गसँ कतय जायब-आयब आसन भऽ गेलैक अछि ?
5. राजगृहमे पर्यटकक लेल सभ सँ पैघ आकर्षण केन्द्र की थिक ?
6. राजगृहमे सभसँ बेसी पर्यटक कोन मासमे अबैत छथि ?
7. कोन पहाड़ परसँ सूर्योदयक शोभा बड़ नीक लगैत छैक ?
8. नालन्दा विश्वविख्यात किएक रहल अछि ?
9. काशी हिन्दूविश्वविद्यालयक बनाबटि ककरा समक्ष गौण भऽ जाइछ ?
10. राजगृहसँ पाटलिपुत्रमे राजधानी के स्थानान्तरित कयलनि ?

पाठसँ आगू

1. अहाँ एहि पाठमे पढलहुँ अछि 'ब्रह्मकुण्डक गर्मजलमे स्नान कयला सँ चर्मरोग छुटि जाइत छैक ।' अहाँक लग-पासमे ककरो एना भेलैक अछि ? अपन जेठ सँ पूछि कऽ लिखू ।

2. 'बिम्बसार बहुत फराके अपन रथ रोकबा पैदल बुद्धक दर्शन हेतु गेल छलाह।' एहि वाक्य सँ बिम्बसारक कोन भाव व्यक्त होइत छैक ? लिखू ।

3. 'ओतुक्का भूमि आ वातावरण सोनाक छल जतऽ हीराक उपजा होयब स्वाभाविक ।' पाठमे ई वाक्य ककरा विषयमे आ किएक कहल गेल अछि ? लिखू।

अनुमान आ कल्पना

1. ह्वेनसांग राजगृहक विषयमे अपन यात्रा-वृत्तान्तमे लिखलनि अछि । ओ कोनठामक छलाह, हुनक की विशेषता छलनि ? एहि विषयमे अपन जेठ सँ गप कऽ कऽ लिखू ।

2. पाठमे 'कैम्ब्रिज आ आक्सफोर्ड' क नाम आयल अछि । ई की अछि आ कतय अछि ? अपन जेठ सँ गप कऽ कऽ लिखू ।

3. विद्यालयक शैक्षणिक यात्राक अपन अनुभव लिखू ।

भाषा अध्ययन

1. नीचाक पंक्तिकेँ ध्यान सँ पढ़ू -

   समयक संग-संग पाइ सेहो कम लगैछ ।

   सभ छात्रक हेतु अलग-अलग आवासक प्रबन्ध ।

   कोनो शब्द विशेष पर बल देबाक लेल ओहि शब्दकेँ दोहराओल जाइत छैक। एहने आओर शब्दकेँ पाठ सँ चुनू आ अपना वाक्यमे प्रयोग करू।

2. पाठमे दक्षिण-पूर्व, बौद्ध-जैन आदि शब्दक मध्य (-) क प्रयोग भेल अछि। एकर अर्थ होइत अछि-दक्षिण आ पूर्व, बौद्ध आ जैन । ई समस्त पद थिक । एहन समस्त पदकेँ पाठ सँ चुनि कऽ ओकर अर्थो लिखू ।

3. (i) एकरा कुशाग्रपुर सेहो कहल गेलैक । एहि वाक्यमे 'सेहो' शब्दक प्रयोग कुशाग्रपुर शब्द पर बल देबक लेल कयल गेल अछि । पाठमे आयल एहन प्रयोग कें लिखू ।

(ii) 'सेहो' शब्दक प्रयोग अपना वाक्यमे करू ।

शब्दार्थ

विख्यात – प्रसिद्ध

आश्रय – सहारा

रज्जुमार्ग – रस्सीक बनल मार्ग

सोल्लास – उल्लासक संग

फरकी – दूरहि / फरके / दूरे

रमणीयता – सुन्दरता

वाचनालय – पत्र–पत्रिका आदि पढबाक सामूहिक कक्ष ।

●

10

अकाल

हथिया बरिसल एको बुन्द नहि,
बिसुखल गाय जकाँ।

मेघ पड़ायल मुँह बिधुऔने,
रुसल जमाय जकाँ।

खेत पानिसँ रहित भेल,
समधी केर आँखि जकाँ।

धूरा उड़ै अछि चौरोमे,
बगुला केर पाँखि जकाँ।

अछि दराड़ि मुँह बौने सबतरि,
बऽरक बाप जकाँ।

महगी चढ़ल माथ पर अछि
सीता केर श्राप जकाँ।

धानक मुँह सुखाइत अछि,
कन्यागत-प्राण जकाँ।

पेट किसानक पचकि गेल अछि,
खखरी धान जकाँ ।

बड़दक दाम बढ़ल जाइत अछि,
बऽरक मोल जकाँ ।

जन मजदूरक बात बिकाइछ,
कनेयाँक बोल जकाँ ।

रब्बिक आशा टूटि रहल,
मुनिगा केर ठारि जकाँ ।

जनता मनमे उमसि रहल अछि,
मैथिल नारि जकाँ ।

- हरिमोहन झा

कवितासँ

1. विसुखल गायमे आ हथिआक पानिमे कवि कोन तरहेँ समानता देखओलनि अछि ।
2. चौरक धूरा आ बगुलाक पाँखिमे समानता अछि कोना ?
3. 'दराड़ि फाटल अछि' तकर की अभिप्राय अछि ?
4. 'धानक खखरी आ किसानक पेटमे' कवि किएक समानता देखा रहल छथि?
5. एहि कविताक आधार पर मैथिल नारीक स्थिति स्पष्ट करू ।

कवितासँ आगू

1. अकालक समयमे प्रकृति कोन तरहेँ प्रभावित भऽ जाइत अछि ? लिखू ।
2. अकालक समस्या आ तकर निदान कोन तरहेँ कयल जाइत अछि ?

अनुमान आ कल्पना

1. अकालक परिस्थितिक जँ सामना करय पड़त तँ कोना करबैक ? लिखू ।
2. विभिन्न प्रकारक प्राकृतिक आपदाक नाम लिखू ।

भाषा-अध्ययन

1. प्रस्तुत पाठमेसँ कोनो पाँच संज्ञा आ विशेषणक चयन कऽ लिखू ।
2. एहि पाठमे सँ कोनो पाँच गोट समूह वाचक संज्ञा चुनि कऽ लिखू ।

शब्दार्थ

बिसुखल	–	जे दूध देनाइ बन्द कऽ देने अछि ।
मुँह बिधुऔने	–	अप्रसन्न मुद्रामे
धूरा	–	गरदा
दराड़ि	–	फाटल
कन्यागत	–	कन्या पक्ष
खखरी	–	धान जाहिमे चाउर नहि हो

●

11

राजा सलहेस

सलहेस अवतारी पुरुष छलाह । हिनका लोकदेवताक श्रेणीमे मानल गेल अछि। हिनकर महत्ता आ महिमा मिथिला आ नेपालमे पुश्त-दर-पुश्त एक कंठ सँ दोसर कंठ धरि गाओल जाइत रहल अछि । मिथिलाक गाम-गाममे कोनो बड़, पीपर ओ पाकड़िक गाछ तर हिनकर गहबर रहैत अछि । गहबरमे हिनक माटिक मूर्ति वा माटिक पिण्ड बनल रहैत अछि । भक्तजन नीपि-पोछि पूजा-अर्चना करैत छथि । राजा सलहेस भौरानंद नामक हाथीक हौदा पर बैसल रहैत छथि ।

हाथीक कान्ह पर मंगला महाओत, दहिना भागमे घोड़ा पर भाइ मोतीराम आ बामा भागमे भाइ बुधेसर सवार रहैत छनि । नीचा दुनू भाग फुलडाली लेने मालिन ओ अंगरक्षक केवला किरात हाथ मे तरुआरि लेने ठाढ़ रहैत अछि । सलहेसक मूर्तिक बगलमे बाघ सेहो रहैछ । एक बेर शत्रु शिकारीक जालसँ बाघकेँ मुक्त कयने छलाह आ तहियासँ बाघक संग सलहेसकेँ मित्रता भऽ गेल छलनि।

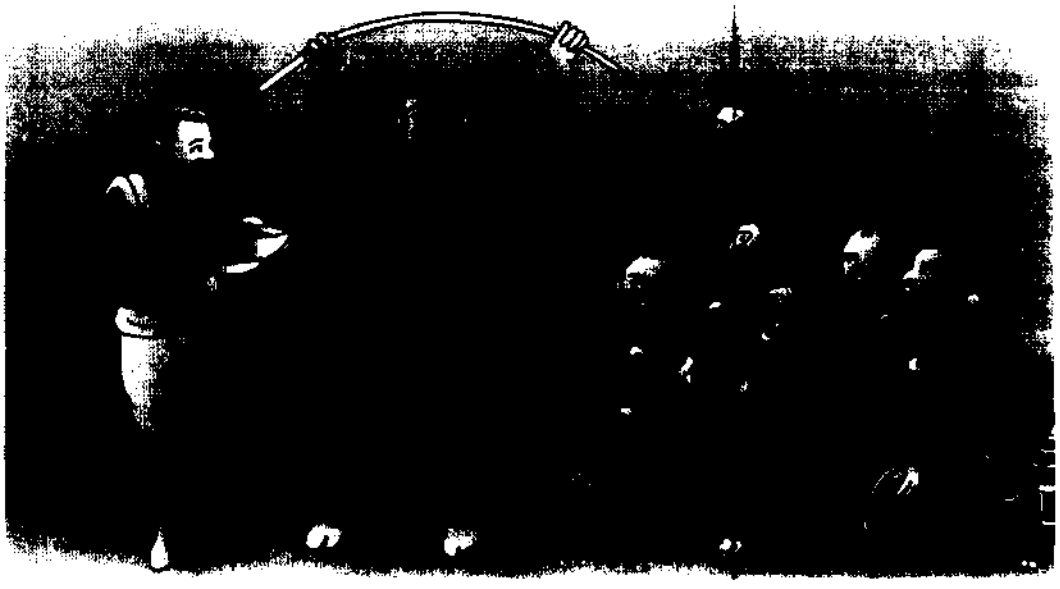

राजा सलहेस देवत्व प्राप्त प्रसिद्ध लोकदेव छथि ।

गृहदेवता ओ ग्राम देवताक रूपमे हिनक पूजा अदौ कालसँ होइत आबि रहल अछि । हिनका जगजिआर देवता मानल जाइत अछि । 'जय राजा जी' नाम लेलासँ विश्वास ओ साहस बढ़ि जाइत अछि । स्फूर्ति आ बल प्रदान होइत अछि । कठिनो काज सहजता ओ सरलतासँ सम्पन्न भऽ जाइत अछि ।

गहबरमे हिनक नित्य पूजा होइत अछि । सालमे एक बेर समारोहपूर्वक सामूहिक पूजा कयल जाइत अछि । त्रिकोण आकारक एक हाथ चौड़गर आ पन्द्रह-बीस हाथ नमगर करीब दू आँगुर मोटगर चिकनी माटिक पिण्ड बना नीपल जाइत अछि । एहि पर बेंत, लाठी, खीर, चीनीबला

लड्डू, पान, सुपारी, जनेउ, अक्षत, अड़हुल फूल, तुलसी दल, सड़र, धूमन, अगरबत्ती, मौड़, झाँप इत्यादि पूजन-सामग्री पसारल जाइत अछि । भगतिया भगैत खेलाइत बेरा-बेरी गोहारि करैत अछि। मृदंग-माँनरिक संग समाजी भाओ भगैत गहबर गीत गबैत छथि -

कौन देव पुरुब गेलइ कौन देव पछिम गेलइ
कौन देव दुलरा गेलइ मोरंग राज ।
दीनानाथ पुरुब गेलइ बुधेसर पछिम गेलइ
दुलरा सलहेस गेलइ, मोरंग राज ।।

हिनकर लोकगाथाकेँ 'महराइ' सेहो कहल जाइत अछि । राति-राति ओ दिन-दिन भरि लगातार गाओल जाइत अछि ।

राजा सलहेस शिव भक्त छलाह । नित्य फुलबारीसँ फूल तोड़ि ओ 'मानिकदह' मे स्नान कऽ शिव-पूजा करैत छलाह । नेपालक फुलबारी मेला जूड़ शीतल दिन होइत अछि, जे आइयो प्रसिद्ध अछि । फुलबारीक वर्णन सलहेस-गाथामे बड़ प्रचलित अछि।

राजा सलहेसक जन्म नेपालक महिसौथामे भेल छलनि । महिसौथा, लहान (नेपाल) सँ करीब 20 कि० मी० पच्छिम-दक्षिणमे पड़ैत अछि । ई दुसाध छलाह । हिनकर माताक नाम शुभगौरी छलनि । शुभगौरीकेँ मायावती ओ मंदोदरि सेहो कहल जाइत छलनि । सोमदेव हिनक पिता छलथिन जे वाकमुनिक रूपमे जानल जाइत छथि। सलहेसक असल नाम छलनि जयबर्द्धन। पर्वतक राजा नामे उपाधि छलनि 'शैलेश' । भाषामे शैलेशसँ सलहेस भऽ गेलाह । 'जय हर्ष' हिनकासँ छोट भाइ रहथि जे मोतीराम नामसँ प्रसिद्ध भेलाह । तेसर भाइ बुधेसर रहथि । 'वनसप्ति' नामक एक गोट बहिन छलथिन । करिकन्हा नामक एक गोट बलशाली भागिन सात सय हाथी चरबैत रहैत छलाह । वनसप्ति बड़ जादूगरनी छलीह आ सभ किछु आगू-पाछू जनैत छलीह।

राजा सलेहसक बिआह बँराटपुरक राजा हलेश्वरक बेटी सौमैरवन्ती सँ भेल छलनि। हिनका सत्यवती सेहो कहल जाइत छलनि । बँराटपुर वर्त्तमानमे विराटनगर भऽ गेल अछि । मोरंग तरेगना गढ़क राजा हिनपति भंडारी केर चारि गोट बेटी छलीह-रेशमा, कुसमा, दोना, फुलवंती । दुर्गा आओर शिवक उपासना करयवाली चारू बहिन ओ श्री सहलेसक सम्बन्ध एक पथक पथिक रहबाक कारणे छलनि । सलहेसक इष्ट दुर्गा ओ शिव छलाह ।

राज पकड़ियाक राजा कुल्हेसर छलाह । ओभीमसेनक नामसँ सेहो जानल जाइत छलाह। चन्द्राक ओगरबाहीक भार पराक्रमक कारणँ सलहेसकेँ देल गेल छलनि। चन्द्रा भीमसेनक बेटी छलीह। ओ सलहेस पर मोहित छलीह । मुदा से सलहेस लेल उचित नहि छलनि ।

राजा सलहेसकेँ हीरामनि सुग्गा, भौरानंद हाथी ओ बाघ प्रिय पात्र छलैक जे हुनक पशु-पक्षी प्रेमकेँ दर्शबैत अछि ।

राजा सलहेस सफल शासक छलाह । हुनक सैन्य बल बहुत मजबूत छलनि । हुनकामे राष्ट्रहित ओ लोकहितक भावना अटूट छलनि ।

एहि तरहेँ शौर्य, पराक्रम एवं शक्तिक प्रतीक छलाह-राजा सलहेस । हुनक वीरता, प्रशासनिक क्षमता आ दैवी-शक्ति लोकगाथाक गायनक मुख्य विषयक रूपमे आइयो गाम-गाम ओ जन-जीवनमे घुलल-मिलल अछि । मिथिलाक लोक-संस्कृतिक परिचय सलहेसक गाथासँ होइत अछि ।

- महावीर नीलकमल

प्रश्न ओ अभ्यास

पाठसँ

1. सलहेस के छलाह ?
2. सलहेसक असली नाम की छलनि ?
3. सलहेसक जन्म कतय भेल रहनि ?
4. सलहेसकेँ कतेक भाइ-बहिन छलनि ? सभक नाम लिखू ।
5. सलहेसक बिआह किनकासँ भेलनि ?
6. सलहेस पर के मोहित छलीह ?
7. सलहेसक पूजा जतय होइत अछि ओहि स्थानकेँ की कहल जाइत अछि?
8. सलहेसक गीत कतय गाओल जाइत अछि ?

9. महराइ ककरा कहल जाइत अछि ?

10. जूड़ शीतल दिन कतय मेला लगैत अछि ?

11. राजा सलहेसक अंगरक्षकक नाम की छलैक ?

पाठसँ आगू

1. राजा सलहेसक पाठमे जतेक नाम आयल अछि तकर सूची बनाउ आ हुनक सलहेससँ सम्बन्ध लिखू ।

नाम	सलहेस सँ सम्बन्ध
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

2. की अहाँ राजा सलहेसक पूजा होइत देखने छी ? यदि हँ, पूजा कोना होइत छैक, संक्षेपमे वर्णन करू ।

3. एहि पाठमे आयल स्थान पर अहाँ गेल छी अथवा एहि स्थान सभहक विषयमे अहाँ सुनने छी ? ओहि स्थान सभहक संक्षेपमे वर्णन करू ।

अनुमान आ कल्पना

1. अहाँक लग-पासमे सलहेस पूजा जकाँ आन-आन कोनो पूजा होइत अछि ? तकर सूची बनाउ ।

2. राजा सलहेसक अतिरिक्त आरो अन्य लोककथा सभक संग्रह करू आ ओकरा वर्गमे सुनाउ ।

3. विद्यालयमे आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रममे सलहेस अथवा कोनो आन लोकगाथाक गीत प्रस्तुत करू ।

4. सलहेस कथाकेँ वार्त्तालाप शैलीमे प्रस्तुत करू ।

भाषा अध्ययन

1. समयक संग शब्द बदलैत अछि । सलहेस पाठसँ ताकि कऽ एहेन शब्द सभ लिखू ।
2. नीचा लिखल शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखू :-
   जगजिआर, नमहर, ऊपर, बाया, मित्रता ।

शब्दार्थ

झाँप – देवी-देवताक निमित्त मौर
(देवी-देवता पर चढ़ाबऽवला कोढ़िलाक बनल सामग्री)

अक्षत – पूजा निमित्त सौंस अरबा चाउर।

भगतिया – जे भगैत गबैत छथि

भगत – उपासक

भगैत – देवी-देवताक आराधनामे गाओल जायवला गीत

गोहारि – दुख हरणक लेल ईष्टक आवाहन

मृदंग – एक प्रकारक वाद्ययंत्र

माँनरि – एक प्रकारक वाद्ययंत्र

समाजी – मुख्य गायकक सहयोगीगण ।

●

12

वसन्त गीत

आएल ऋतुपति साजि शृंगार
धरती पहिरल कुसुमक हार ।

चहुँ दिस पसरल रूप पथार
कोकिल घर-घर देल हकार ।

किसलय कुसुम हँसे चहुँओर
सुरभित पवन करे झिकझोर ।

उपवन गुंजित भ्रमरक गान
नभ मे बिहुँसल मधुमय चान ।

- जनक किशोर लाल दास

कवितासँ

1. ऋतुपति ककरा कहल जाइत अछि ?
2. वसन्त ऋतुमे धरती की पहिरैत अछि ?
3. वसन्त ऋतुमे घर-घर हकार के दैत अछि ?
4. चहुँओर वसन्त ऋतुमे की हँसैत अछि ?
5. वसन्त ऋतुमे केहन पवन झिकझोर करैत अछि ?
6. उपवनमे ककर गान गुंजन करैत अछि ?

कवितासँ आगू

1. वसन्त ऋतुमे की-की नव परिवर्तन देखना जाइछ ? एकर सूची बनाउ।
2. एक गोट एहन चित्र बनाउ जाहिसँ वसन्त ऋतुक बोध होय ।
3. वसन्त ऋतुमे ई सभ की करैत अछि ? लिखू -

   कोकिल, भ्रमर, पवन, कुसुम, धरती, उपवन, नभ ।

अनुमान आ कल्पना

वसन्त ऋतुमे होमयवला पावनि फगुआ पर एक गोट कविता लिखू ।

वसन्त ऋतुकेँ ऋतुराज कहल गेल अछि । शिक्षकक सहयोग सँ वर्ग मे चर्चा करू।

भाषाक अध्ययन

1. निम्नांकित शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखू :-

   घर, नभ, आएल, धरती, चान ।

शब्दार्थ

कुसुम	-	फूल
कोकिल	-	कोइली
हकार	-	बजाएब
पवन	-	हवा
सुरभित	-	सुगंधित
झिकझोर	-	हिलब-डोलब
उपवन	-	फुलवाड़ी
नभ	-	आकाश
चान	-	चन्द्रमा
मधुमय	-	रसगर

●

13

मिथिलाक नदी

मिथिलांचलमे नदीक बाहुल्य अछि। नदीक तट पर लोक सभ बसैत गेल तैं एहि अंचलक नामान्तर, तीरभुक्ति, तिरहुति या तिरहुत भेल । पूबसँ, पश्चिम धरि नदीक भरमार अछि । बाढ़ि, जल विभीषिका, प्रलय, महाप्रलय एहि अंचलक लेल स्थायी समस्या अछि । डूबल सड़क, डूबल घर, ऊब-डूब करैत गाछ-वृक्ष, कोसक कोस जलमग्न धरती । बाढ़िमे डूबैत लोक । विनाशक

ऊंच ग्राफ। नदीक प्रवाहमे डूबल गाम-घर । नदीकेँ लय कऽ अनेक लोककथा, लोकगाथा ओ लोकगीत । माटिक लोक सोनाक नैयावला गीत-कथा । मिथिलामे सातटा मुख्य नदी अछि। गण्डक, बूढ़ी गण्डक, बागमती, अधवारा समूहक नदी, कमला, कोसी तथा महानन्दा । सभ नदी गंगामे समाहित भऽ जाइछ । बूढ़ी गण्डक ओ महानन्दा केँ छोरि सभ नदीक उद्गम स्थान नेपालमे अछि । बूढ़ी गण्डक पश्चिम चम्पारण जिलाक चौतरवा चौर सँ' तथा महानन्दा पश्चिम बंगाल मे कार्सियांग लग सँ' निःसृत होइत छथि। एहि दुनू नदीक अधिकांश जल ग्रहण क्षेत्र नेपालमे छैक। एतयक सभ नदी अपन प्रवाहमे अत्यधिक मात्रामे माटि ओ बालु बहा कऽ लबैत अछि। हिमालय पर्वतमाला अपन निर्माणक प्रारम्भिक अवस्थामे अछि । भुरभुर माटिक ढेर । एहि तरहक माटि नदी के सुगमताक संग कटाव कऽ दैछ तथा माटि ओ बालु केँ मैदानमे पहुँचा दैछ । नदी जखन पहाड़ सँ' मैदानमे उतरैत आछि तँ, ओकर वेग कम रहैत छैक । पानि, माटि ओ बालुक संग विस्तृत क्षेत्रमे ई पसरि जाइछ तथा नदीक कछेड़क निर्माण होइछ । कछेड़मे जमा होइत माटि ओ बालु अगिला वर्षाक मौसम मे नदीक प्रवाह केँ रोकैत छैक, जकरा काटि कऽ नदी अपन नव रास्ता बना लैत छैक । नदीक धारा परिवर्तन एहिना होइछ । हिमालय सँ' निःसृत नदीक कछारक निर्माणक प्रक्रिया रूकल नहि छैक । धारा परिवर्तन बन्द नहि भेल छैक । तँ हेतु बाढ़ि अबैत अछि । बाढ़िक कारण खेतमे नव माटि पड़ैत छैक, जे पोषक तत्व छैक । एतयक उपजाऊ माटि आ जल बहुतायत लोक केँ बसबाक हेतु आकर्षित कयलक । फलस्वरूप एहि अंचलमे जनसंख्याक घनत्व अधिक छैक। एहि अंचलक अन्य छोट-छोट नदी-बाया, लखनदेई, खिरोई, व्याघ्रमुखी, जमुनिया, जीवछ, करेह, कमला बलान, भुतही बलान, तिलयुगा, कौशिकी उपधारा (बेतु, घेमुरा, तिलाबह, परवाने चिलौनी, हइयाधार, लच्छाधार, कारी कोसी), सउरा, पनार कवर, कंकई, मेची आ अन्य मिथिलाक भू-खंडकेँ पटबैत गंगामे विलीन भऽ जाइछ । धन-धान्य सँ परिपूर्ण करैछ तथा जनक, याज्ञवल्क्य, गौतम, तीर्थंकर महावीर, कुमारिल भट्ट, मण्डन मिश्र, वाचस्पति, ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आदि सारस्वत विभूतिक जन्मभूमि बनैछ ।

- नरेन्द्र झा

प्रश्न ओ अभ्यास

पाठसँ

1. मिथिलांचल केँ तिरहुति किए कहल गेल अछि ?
2. मिथिलामे कतेक नदी अछि, पाँचटाक नाम लिखू ?
3. मिथिलाक नदी कोन नदीमे समाहित होइत अछि, आ सभ नदीक उद्‌गम स्थान कतय अछि ?
4. बाढ़ि सँ की लाभ होइत अछि ?

पाठ सँ आगू

1. भारतक नदीक तुलना पाठमे देल गेल नदी सँ करू ।
2. मिथिलामे नदीक की महत्त्व अछि ?
3. हिमालयसँ बहरायल नदीमे कोन-कोन परिवर्त्तन भेल अछि ?

अनुमान आ कल्पना

1. नदी सुरक्षाक लेल कोन-कोन कार्य भऽ रहल अछि ? जानकारी प्राप्त करू आ अपन सुझाव दिअ ।
2. नदी सँ होमयवला लाभक विषय पर दस पाँतीक लेख लिखू ?
3. मिथिलामे 1970 क बाद कहिया-कहिया बाढ़ि आयल अछि ? जानकारी प्राप्त करू ।

भाषा-अध्ययन

विपरीतार्थक शब्द लिखू :

1. आगिक विपरीतार्थक शब्द होइत अछि पानि । एहिना निम्न शब्द सभक विपरीतार्थक शब्द लिखू :-

   अतिवृष्टि, प्रलय, आकाश, डूबल, विनाश, ऊँच

2. 'स्थायी समस्या' पदमे स्थायी विशेषण शब्द अछि आ समस्या विशेष्य शब्द। विशेषण ओ शब्द थिक जे संज्ञा वा सर्वनामक विशेषता बतबैत अछि । एहन पाँचटा विशेषण पद कें पाठ सँ चुनिकऽ अपना वाक्यमे प्रयोग करू ।

शब्दार्थ

बाहुल्य	– अधिकता, बहुलता
विभीषिका	– आफत
समाहित	– समावेश
विभूति	– महानपुरुष, गणमान्य
कछेड़	– किनार

●

14

मूस - महिमा

मूसक रूप विशाल, छोट, अछि मध्यम दर्जा ।
गोरिना, मुसरी, मूस, एकर धरि सूनू दिनचर्या ।।

दश अवतारक बाद एकादश मूस रूप ई ।
पृथ्वी पर अवतरित भेल संकट स्वरूप ई ।।

नहि एक्को छन चैन अपन जीवन छै एक्कर ।
शिर पर बहुतो काज ताहि मे हरदम तत्पर ।।
ककरो बान्हल मोरि बीआ केर तकरा खाकै ।
चलि उठते लै झुंड फेर घर आङन ताकै ।।

नहि रहत जँ भूर तखन ई बीअरि कोरत ।
धरती तर सँ आनि माटि ऊपरमे छोड़त ।।
कूट-कूट काटत ईंट, भीत के ढाहि खसाओत ।
लगले हुलकी देत फेर चट मुँह नुकाओत ।।

कोठी, बोरा, ढेक, बखारी, भारा- बासन ।
ई छै एकर दलान जतै लगाबै अछि-आसन ।।
शतविल एक्कर राजमहल अछि धरती मे ।
जाहिठाँ रहि ई करै निरीछन नित घर घरमे ।।

ककरो राखल अन्न बखारिक पेनी काटै ।
ककरो घरमे कोड़ि माँटि आङन के पाटै ।।
चाटै कर्म गरीबक कनिओ राखल अन्नके ।
नहि एक्को व्यक्ति भेल एकरा नीक कहतजे ।।

केहनो कपड़ा मूल्यवान हो तै की एकरा ।
दर्शन जकर भेल कटिकै छोरल तकरा ।।
तैं की ! मलमल होथु रेशमी, ऊनी, मटका,
अद्धी, सपटा, ननगिलाट व धोती मोटका ।।

सब पर एक समान नजरि रहइत अछि मूसक ।
नहि एकरा लग गप्प रहत ककरोसँ घूसक ।।
नहि अछि एक्कर लक्ष्य खासकै ककरो चूसक ।
सबके एक समान, बराबरि सबकेँ धूसक ।।

एकरा हेतुए छथि समान गणपति वा भारवि ।
कालिदास, वा वाणभट्ट वा तुलसी सन कवि ।।
सबहक पुस्तक एक रूप सँ काटि सकै अछि ।
केहनो धर्मक ग्रन्थ तुरत ई चाटि सकै अछि ।।

नहि अछि एक्को काज एहन जे मूस नहि करते ।
नहि अछि एक्को बीत जाहिठाँ नहि संचरते ।।
भए गेल मूसे बीस मनुक्खे हारल संभव ।
कए देलक ई मूस घरे घर आइ पराभव ।।

जँ करता किछु कृपा विघनहर तँ दुख हटते ।
मूस उछन्नर रूप कठिन संकट ई मिटते ।।

– मथुरानन्द चौधरी ''माथुर''

प्रश्न ओ अभ्यास

कवितासँ

1. बीअरि कोरि मूस उपरमे की छोड़ैत अछि ?
2. मूस कथी केर ढ़ाहि खसबैत अछि ?
3. मूसक दलान कोन-कोन अछि ?
4. मूसक राजमहल कोन अछि, बताउ ?
5. कोन-कोन मूल्यवान कपड़ा कैं काटि मूस छोड़ि दैत अछि ?

कवितासँ आगू

1. बहुतो गोटे मूस पोसैत अछि –

(क) मूसकैं पोसनाई उचित अछि अथवा नहि । अपन विचार लिखू ।

(ख) की अहाँ अथवा अहाँक जनतबमे क्यो कहियो मूस पोसने अछि ? ओकर देख-रेख कोन रूपैं कयल जाइत हेतैक ? लिखू ?

अनुमान आ कल्पना

1. मूस घरक लेल उपयोगी अथवा अनुपयोगी होइछ । एहि पर वाद-विवाद प्रतियोगिताक आयोजन करू ?
2. मूसे जकाँ अहाँक टोल-पड़ोसमे आन कोनो जीव-जन्तु छैक जाहिसँ लोक तबाह अछि ? कीएकरासँ बचबाक उपाय करब आवश्यक बुझैत छी ? लिखू ।

भाषा अध्ययन

विशाल, छोट, मध्यम, मूल्यवान आदि शब्द सभ पाठमे कोनो ने कोनो संज्ञाक विशेषता बतबैत अछि। संज्ञा वा सर्वनामक विशेषता जे शब्द बताबय ओ विशेषण कहबैछ । जेना

विशाल, छोट, मध्यम शब्द मूसक आकार बतबैत अछि। विशेषण पाँच प्रकारक होइछ - गुणवाचक, संख्यावाचक, परिणामवाचक, स्थानवाचक आ सार्वनामिक। पाठमे कोन-कोन प्रकारक विशेषणक प्रयोग भेल अछि, चुनिकऽ लिखू ।

शब्दार्थ

दिनचर्या	- दैनिक कार्य
बखारी	- अन्नक भण्डार
दलान	- आँगन सँ बाहर पुरुषलोकनिक बैसकी, बहरघरा
विभूति	- महानपुरुष, गणमान्य

●

15

संतोषक गाछ

पात्र- परिचय :

श्रीदेव	–	45 वर्ष	–	प्रियरंजनक पिता
प्रियरंजन	–	13 वर्ष	–	श्रीदेवक पुत्र
रमेश	–	13 वर्ष	–	प्रियक वर्ग-संगी
शिक्षक	–	40 वर्ष	–	स्कूलक शिक्षक
मंजु	–	35 वर्ष	–	श्रीदेवक पत्नी ।

पहिल दृश्य

(गरीबक घर, टूटल-फाटल खाट, बिनु टाटक आँगन)

प्रियरंजन – (लोहछि कऽ) देख, माँ । आब हम स्कूल नहि जयबौक से कहि दैत छियौक ।

मंजु – (आश्चर्यसँ) किऐक ने स्कूल जयबहक ? की भेलह अछि ?

प्रिय – पुछैत छथि कोना । जेना बुझले ने होइन्ह ।

मंजु – हम कोना बुझबैक ? कोनो की हम लाल बुझक्कड़ छी ? (स्वगत) हँ, आब बुझलियैक ।

प्रिय – (स्नेहसँ) की बुझलहिन माँ ।

मंजु – एकटा कहबी मोन पड़ि गेल ।

प्रिय – की छैक ओ कहबी ।

मंजु – (हँसि कऽ) 'कानक मोन अछि तँ आँखिमे गड़ल खुट्टी ।' स्कूल जयबाक मोन नहि छह तँ बहाना बनबैत छह । हरहट्टी जकाँ जुनि करह।

प्रिय – (तमकि कऽ) हँ, हँ, हमरा स्कूल जयबाक मोन नहि अछि ।

मंजु – तखन स्कूल जयबा लेल तैयार किऐक नहि होत छहक ।

प्रिय – (कनेक गुम भऽ) पैंट फाटि गेल अछि कमीज पहिनेसँ फाटल अछि । तखन ..... ।

मंजु – तँ की होयतैक ।

प्रिय – (सहमि कऽ) लाज होइत अछि ।

मंजु – जनमि कऽ ठाढ़ भेलह अछि आ एखनेसँ लाज होमऽ लगलह । जीवन तँ पड़ले छह । एना जुनि करह ।

प्रिय – तौँ तँ माँ की दन सभ बाजऽ लगलीही । ले, पैंट हमर सीबि दे ।

मंजु – लाबह (पैंट सीबऽ लगैत छथि) ।

प्रिय – एकटा बात कहियौक माँ । बिगड़बै तँ नहि ।

मंजु – किऐक बिगड़बह । कहक ने । हम कोनो बताहि छी जे बिगड़बह । तखन तँ परिस्थिति ..... ।

प्रिय – बताहि तँ नहि भेल छँ माँ । मुदा ..... ।

मंजु – मुदा की ।

प्रिय – मुदा ई जे राजीव हमरा खिसिअबैत रहैत अछि जे ..... ।

मंजु – हम सख डाहि देबनि खिसिएनहारकेँ । की खिसिअबैत छह से ने कहऽ?

प्रिय – कहैत रहैत अछि जे ''तोहर माय-बाप केहन घोंछ छौ । फाटल पैंट-कमीज पहिरा कऽ विदा करैत छौ । सभ किताबो तँ नहि छौ, कोना पढ़बहीं ।''

मंजु – (दुलारसँ) एहिमे लाजक कोन बात भेलैक, बेटा । कहि दियैक जे हमर पिताजी दिल्लीमे नौकरी करैत छथि । जखने टाका आओत, तखने सब वस्तु हम कीनि लेब ।

प्रिय – माँ, सभ दिन तोँ एहिना ठकैत रहैत छेँ ।

मंजु – (उदास भऽ) बेटा, संतोषक गाछमे मेवा फड़ैत छैक । संतोष राखी, एक दिन मनोकामना सभ पूर भऽ जयतह । अपने मोन लगा कऽ पढ़बह, तँ सभ किछु भऽ जेतह । नहि तँ ..... ।

प्रिय – नहि तँ की भऽ जयतैक ।

मंजु – जीवन भरि दु:खेक जीवन रहि जयतह । हमरा सभकेँ नहि देखैत छह । (सम्हरैत) जाह, तोरा की कहि देलियह ।

प्रिय – माँ, हम वचन दैत छियौक जे मोन लगा कऽ पढ़ि-लिखि कऽ देखा देबौक ।

मंजु – एकटा कहबी बूझल छह किने ?

प्रिय – की ?

मंजु – सूरदासकेँ क्यो पुछलकनि जे घी भेटल । तँ ओ झट दऽ उत्तर देलखिन - 'गड़गड़ेने बुझबैक ।'

प्रिय – माँ पैंट सील भेलौक कि ने । ला, आब स्कूलक अबेर होइत अछि ।

मंजु – लैह, तैयार होअऽ जल्दी । हम 'टिफिन' नेने अबैत छियह ।

प्रिय – की छौक 'टिफिन' मे ।

मंजु – बेटा, आइ टिफिन लेल घरमे कोनो नीक वस्तु नहि छह । बारीसँ लताम तोड़ि कऽ अनने छियह, नेने जाह । (दसटा लतामक मोटरी बान्हि कऽ दैत छथि ।)

प्रिय – एतेक लऽ कऽ की करब । पेट अछि कि बखारी ।

मंजु – अपन संगी-साथी सभकेँ सेहो दियहक ।

प्रिय – इह, हम नहि देबैक ककरो ! हमरा कहियो क्यो दैत अछि ?

मंजु – एहन कथा जुनि बाजी । बुझल छह किने जे "बाँटि-चुटि खाई, राजा घर जाइ।"

प्रिय – एहनो कतहु भेलैक अछि ।

मंजु – खूब भेलैक अछि । संतोषक गाछमे मेवा फड़ैत छैक ।

प्रिय – हम कथमपि नहि देबैक । सभ बात हम तोरे मानैत छियौक । एकटा हमरो बात मान ।

मंजु – एहन जिद्दी नहि बनी । (स्नेहसँ) अहाँ राजा-बेटा छी । नीक बच्चा माय-बापक कथा नहि टारैत छैक ।

प्रिय – बेस, तँ तोरो बात रहलौक ।

मंजु – बड़ अबेर भऽ गेलह । जाह, स्कूल जल्दी ।

प्रिय – जाइत छी ।

(प्रिय पीठ पर किताबक बस्ता टंगने ई बजैत स्कूल जा रहल छथि जे संतोषक गाछमे मेवा फड़ैत छैक । मंजु घरक कोनटामे ठाढ़ भेल अपन बेटाकेँ ताबत धरि देखैत छथि जावत धरि ओ आँखिक ओझल नहि भऽ जाइत छथि)

[पर्दा खसैत अछि]

दोसर दृश्य

(शिक्षक वर्गमे कुर्सी पर बैसल छथि आ पस्थिति-पुस्तिका खोलि कऽ हाजरी लऽ रहल छथि । किछु विद्यार्थी बैसल छथि आ आगाँमे किताब-कापी रखने छथि)

शिक्षक – सावधान । क्रमांक-एक । (स्वगत) अनुपस्थित । क्रमांक- दू ।

रमेश – उपस्थित महाशय ।

(किछु विद्यार्थी धक्कम-धुक्की करऽ लगैत छथि)

शिक्षक – चुप रहैत जो । हल्ला किऐक करैक छँ । औ रमेश ! आइ प्रियरंजन स्कूल किऐक ने आयल अछि ?

रमेश – हम नहि जनैत छियैक । हम एकटा बात कहू ?

शिक्षक – अवश्य कह ।

रमेश – प्रियरंजनकेँ घमंड भऽ गेलनि अछि ।

शिक्षक – से की तुँ बजैत छँ ।

रमेश – मास्टर साहेब । प्रिय वर्गमे प्रथम आबि गेल अछि से ओ धरती पर पैर नहि दैत अछि । आखिर, गरीबक बेटा अछि कि ने । 'अधजल गगरी छलकत जाय ।'

शिक्षक – तूँ की बजैत छँ ।

रमेश – हम सत्ते कहैत छी मास्टर साहेब ।

शिक्षक – (डाँटि कऽ) अवस्थे अनुसार बाज । 'छोट मुँह, पैघ बात' शोभा नहि दैत छौक।

रमेश – अहाँ व्यर्थ हमरा किछु पुछलहुँ ।

शिक्षक – तूँ अनुशासनहीन भेल जाइत छँ । भरि घंटी ठाढ रह ।

(रमेश ठाढ़ भऽ जाइत छथि)

शिक्षक – आइ बैस, मुदा फेर एहन गल्ती जुनि करिहँ ।

(प्रियरंजन सकपकायल वर्गमे किताबक झोरा आ लतामक मोटरी नेने प्रवेश करैत छथि)

शिक्षक – प्रिय, तोरा अबेर होयबाक की कारण !

प्रिय – मास्टर साहेब, पैंट फाटल छल । माँ सीबऽ मे विलम्ब कऽ देलकैक ।

शिक्षक – ओह ! से बात रहैक । (प्रियेकेँ संकेत करैत) बैस । मुदा, मोटरीमे की सभ छौक ?

प्रिय – लताम अछि ।

शिक्षक – एतेक लऽ कऽ की करबैं ।

प्रिय – सभ संगी सभकेँ देबनि । हमर माँ कहैत छैक जे 'बाँटि चुटि खाइ, राजा घर जाइ!'

शिक्षक – सत्ते कहैत छथुन्ह तोहर माँ । गरीबक घरमे जतेक संतोष रहैत छैक, ततेक धनिकक घरमे नहि । कहलो जाइत छैक – 'जे नन्हु से गर्भे नन्हु ।' (टिफिनक घंटी बजैत अछि) ।

(प्रियकेँ संकेत करैत) हे, रमेशकेँ सेहो लताम दिअही ।

प्रिय – अवश्ये देबैक रमेशकेँ ।

[पर्दा खसैत अछि]

तेसर दृश्य

(घरमे प्रिय जोर-जोरसँ किताब पढ़ैत छथि । मंजु अपन फाटल साड़ी मे चेफड़ी लगबैत। केबाड़ीक ठक्-ठक्)

मंजु – देखहक तँ प्रिय, के छैक ।

(प्रिय केबाड़ी खोलैत छथि तँ देखैत छथि जे हुनक पिता श्रीदेव एकटा हल्लुक ट्रंक नेने ठाढ)

प्रिय – माँ, माँ । बाबूजी अयलखुन ।

मंजु – कहैत छलियह किने । कौआ कुचरैत छलैक ।

प्रिय – (पिताकेँ गोड़ लगैत) हमरा लेल की सभ अनलहुँ अछि ।

मंजु – बैसह दहुन ने । तखन पुछियहुन ।

श्रीदेव – अहाँकेँ की सभ चाही ? बाजू । (स्वगत) हम सभ वस्तु अहाँ लेल अनलहुँ अछि।

प्रिय – पैंट-कमीज ।

श्रीदेव – दुनू चीज अनने छी । आर पुछू ।

प्रिय – हमरा आर किछु नहि चाही । बस एतबे ।

मंजु – भऽ गेलनि एतबेमे संतोष । एही लेल बेहाल छलाह ।

श्रीदेव – घीयापूताकेँ लौल रहैत छैक । मोन तँ होइत रहय जे प्रिय लेल की-की सभ ने आनी । मुदा ..... ।

मंजु – अपने पढ़ताह- लिखताह तँ सभ भऽ जेतनि ।

श्रीदेव – बेजाय नहि कहबी छैक । 'कान तँ सोन नहि, सोन तँ कान नहि ।'

मंजु – बाप-मायक किछु नीक कहब आँखि लागि जाइत छैक । तँ नहि कहियौक । जाऊ पैर-हाथ धोउ गऽ ।

श्रीदेव – एम्हर आउ प्रिय । अहाँ लेल सोहन हलुआ नेने आयल छी । दिल्लीक ई नामी मधुर छैक ।

प्रिय – लाउ-लाउ बाबूजी ।

श्रीदेव – (हलुआ दैत)

प्रिय – बड़ विलक्षण अछि । (हबड़-हबड़ खाइत)

श्रीदेव – हे, देखू । अहाँ लेल हम केहन सुन्दर पैंट-शर्ट नेने आयल छी।

प्रिय – (देखैत) उत्तम अछि ।

श्रीदेव – नीक रिजल्ट कऽ कऽ देखाउ । तखन ने बूझब ।

प्रिय – अपना भरि प्रयासमे लगले छी । तखन तँ ..... ।

मंजु – (श्रीदेवक दिस देखैत) मनोबल बढ़बैत रहियनु । नीक करबे करताह ।

श्रीदेव – यौ प्रिय । एकटा बात गेठी बान्हि लियऽ । पढऽमे प्रतियोगिता अवश्ये राखी, मुदा संगी सभक संग घृणा द्वेषक प्रतियोगिता जुनि करी । घृणा करक प्रवृत्ति मनुष्यक व्यक्तित्वमे बट्टा लगबैत छैक ।

प्रिय – हे, हमरा संग जे क्यो घृणा करैत छथि । हुनको संग हम प्रेम देखबैत छियनि । (किबात पढ़ऽ लगैत छथि)

मंजु – यैह ने बड़प्पन छैक ।

श्रीदेव – आखिर, बेटा ककर छैक ।

मंजु – फेर वैह बात । आँखि नहि लगबियौक ।

श्रीदेव – आँखि की लगेबनि । मुदा, आत्माक स्वर बाजि उठैत छैक । एकरा कतहु रोकल जा सकैत छैक ।

मंजु – औ प्रिय । आइ स्कूल जयबाक नहि छह की । देखहक, कतेक बाजि गेलैक ।

प्रिय – ओह ! नौ बाजि गेलैक । माँ, जल्दीसँ खाय लेल काढ़, हम तुरत स्नान कऽ लैत छी ।

मंजु – हे । सुनैत छी ।

श्रीदेव – की कहैत छी ।

मंजु – अहूँ स्नान कऽ भोजन कऽ लियऽ । भुखायल होयब ।

श्रीदेव – बेस कहैत छी ।

(सब गोटे विदा होइत छथि)

(पटाक्षेप)

चारिम दृश्य

(स्कूलक कक्षामे विद्यार्थी सभ गप्प कऽ रहल छथि)

रमेश – की औ प्रिय । आइ की छैक ।

प्रिय – से की ।

रमेश – देखैत छियह बनल-ठनल । (पैंट-कमीज दिस देखबैत) कतऽसँ ई सभ ।

प्रिय – हमर पिताजी दिल्लीसँ नेने लयलाह अछि ।

रमेश – आब बुझलहुँ । तोहर पिताजी नोकरी करैत छथुन से तँ बुझले नहि छल ।

प्रिय – ई कोन पैघ बात छैक ।

रमेश – हम तँ बुझैत छलहुँ जे तूँ निर्धन छऽ मुदा ..... ।

प्रिय – तूँ ठीके बुझैत छलह ।

रमेश – हमरा क्षमा कऽ दिहऽ ।

प्रिय – कथीक । कोन अपराध लेल ।

रमेश – हम तोरा गरीबीक मजाक उड़ौने छलिअह ।

प्रिय – कोन ठाम ।

रमेश – अपन 'सर'क सोझामे ।

प्रिय – सत्त कहैत छिअह । हमरा एहि सभ बात लेल कनेको हर्ष आ विषाद नहि होइत अछि ।

रमेश – सत्ते तूँ धन्य छह ।

प्रिय – बेसी जुनि बनाउ । आब हम सभ चुप रही । शिक्षक वर्गमे आबि रहल छथि ।

(सभ विद्यार्थी सावधान भऽ जाइत छथि । शिक्षकक प्रवेश)

शिक्षक – (हाजरी लैत) क्रमांक - एक ।

प्रिय – उपस्थित महाशय ।

शिक्षक – तोरा लेल खुशखबरी छह ।

रमेश – (झट् दऽ उठि) की छनि खुशखबरी ?

शिक्षक – तूँ अलग टेंट जकाँ किऐक करैत छँ । बैस, कहैत छिऔक । प्रियकेँ प्रतिभा छात्रवृत्ति भेटलैक अछि ।

रमेश – मासमे कतेक वृत्ति भेटतैक ?

शिक्षक – मैट्रिक धरि सभ खर्च सरकार देतनि ।

रमेश – की औ प्रिय । तूँ एना चुप्पी किऐक मारि देलहक ।

प्रिय – तँ की नाचू ?

रमेश – अवश्य । हम सब नाचब-गायब । तूँ हूँ संग दिहऽ ।

प्रिय – कथीक लेल ?

रमेश – तूँ हमर स्कूल आ कक्षाक इज्जत बढ़ौलह अछि ।

शिक्षक – (प्रियकेँ बजा कऽ पीठ ठोकैत) तूँ जीवनमे पूर्णत: सफल होअह से कामना । जा, तूँ अपन माता-पिताकेँ खबरि कऽ दहुन्ह ।

प्रिय – (शिक्षकक पैर छुबैत) अहींक आशीर्वादक फल अछि ।

शिक्षक – दीर्घायु ।

(शिक्षक वर्गसे विदा भऽ जाइत छथि)

(पर्दा खसैत अछि)

पाँचम दृश्य

(प्रिय दौड़ैत-हँफैत घर पहुँचैत छथि)

मंजु – एना अहाँ किऐक हँफैत छी ।

प्रिय – माँ, हमरा प्रतिभा छात्रवृत्ति भेटि गेल ।

मंजु – सुनैत छियैक औ ।

(श्रीदेवक धड़फड़ायल प्रवेश)

श्रीदेव – की भेलनि अछि ।

मंजु – बेटा, गोड़ लगहुन बाबूजीकेँ । प्रियकेँ छात्रवृत्ति भेटि गेलनि ।

(प्रिय माय-बापकेँ गोड़ लगैत छथि)

श्रीदेव – हे, देखियौक । समय बलवान होइत छैक । के कखन राईसँ पर्वत आ पर्वतसँ राई होयत से कहब कठिन ।

मंजु – सत्ते औ । जखन नीक दिन होइत छैक, तखन माँटि छुलासँ सोन भऽ जाइत छैक आ दुदिनमे सोन छुलौसँ माँटि ।

श्रीदेव – अहीं तँ कहैत छलियैक जे माय-बापक नीक कहब धीया-पूतावेँ आँखि लागि जाइत छेक ।

मंजु – जाह, की बजा गेल पापी मोन ..... ।

श्रीदेव – छोड्डू, ई आहे-माहे । प्रियकेँ मधुर खुअवियन ।

मंजु – चलू; प्रिय । मधुर खाउ गऽ ।

प्रिय – एकटा बात कहि दैत छियौक माँ ।

मंजु – की ।

प्रिय – हम पढ़ऽजयबौक नेतरहाट स्कूलमे ।

मंजु – एतेक दूर पढ़ऽ कोना जायब ।

प्रिय – हम आब कोनो बच्चा छी ।

मंजु – माय-बापक लेल घीयापूता नेने रहैत छैक, खाहेँ ओ किऐक ने बुधियार भऽ जाइक।

श्रीदेव – अहूँ दुनू माय-बेटा खूब छी । जखन जे हेतैक से देखल जयतैक सोचल कोनो काज होइत छैक ? चलू, प्रियक संग-संग हमरो लोकनि मधुर खा ली ।

मंजु – बेजाय कोन कहैत छियैक ।

(सभ गोटे प्रसन्न भऽ बिदा होइत छथि । सुखद संगीतक ध्वनि)

(पटाक्षेप)

– भाग्यनारायण झा

प्रश्न ओ अभ्यास

पाठसँ

1. एहि पाठक नाम 'संतोषक गाछ' किएक राखल गेल अछि ?
2. प्रियरंजनक स्वभावक विशेषतासँ परिचय कराउ ?
3. प्रियरंजन पहिल दिन किएक स्कूल नहि जाय चाहैत छलाह ?
4. रमेशकेँ प्रियरंजनसँ किएक ईर्ष्या छलनि ?
5. श्रीदेव दिल्लीसँ की सभ अनलनि ?

पाठसँ आगू

1. मास्टर साहेबक संवेदनशीलताक परिचय दिअ ।
2. एहि नाटकसँ अहाँकेँ की शिक्षा भेटैत अछि ?

अनुमान आ कल्पना

1. एहि एकांकीक अभिनय करू
2. एहि एकांकीक कथा संक्षेपमे लिखू ।
3. 'संतोषक गाछमे मेवा फड़ैत छैक' एहने आन रचना शिक्षकक सहयोगसँ ताकू आ वाचन करू।

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित लोकोक्तिक अर्थ स्पष्ट करैत वाक्य बनाउ ।
   (क) कानक मोन अछि तँ आँखिमे गड़ल खुट्टी।
   (ख) अधजल गगरी छलकत जाय ।

(ग) छोट मुँह पैघ बात ।

(घ) जे नुनू से गर्भे नुनू ।

2. पाठसँ पाँच गोट विशेषण शब्द चुनिकऽ लिखू ।

शब्दार्थ

विलक्षण	- बहुत सुंदर
प्रवृत्ति	- आदति, स्वभाव
दुर्दिन	- अधलाह दिन
कथमपि	- किन्नहु नहि
निर्धन	- गरीब
विषाद	- दुःख
हर्ष	- खुशी

●

16

दुपहरि राति

अन्हार गुजगुज रातिक छाती चीरैत कारी-कारी मेघमे जेना बिजली छिटकैत अछि तहिना फ्रांटिअर मेल दौड़ल जा रहल छल । जाड़क राति रहैक । कम्बल तर घोषिअयबासँ पूर्व सुधांशु खिड़कीसँ बाहर तकलक । खिड़कीक सीसा मोट रहैक तँ बाहर ठीकसँ सूझैत नहि रहैक । सभ किछु झलफल-झलफल देखाइक । तैओ बुझयलैक, ई आकार जंगल आ पहाड़क भऽ सकैत अछि, कोनो गामक नहि । पूरा भूखण्डमे इजोतक कतहु पता नहि । अकस्मात् सुधांशुकेँ मोन पड़लै, ओ उपन्यासमे कि समाचार-पत्रमे पढ़ने रहय जे ई इलाका खतरनाक डाकूक गढ़ थिक । डाकूसभ एकर गुफा आ घनगर झाड़ीमे नुकायल रहैत अछि ; गओँ पाबि आक्रमण करैत अछि आ गाड़ीकेँ कोनहुना रोकि लैत अछि ।

सुधांशु प्रथम श्रेणीक डिब्बामे यात्रा कय रहल छल । एसकरे रहय । उठिकऽ बैसि गेल। कते भारी गलती कयने रहय ओ जे प्रथम श्रेणीक टिकट लेलक । आ सेहो रतुका ट्रेनमे । ओ मुख्य बत्ती मिझा देलक आ नील रंगक मद्धिम बत्ती बारलक । एहिसँ गाड़ीक बाहरी दृश्य कनेक साफ देखाय लगलैक ।

ओ कने खिड़की दिस बढ़ल कि लगलैक जेना ओहिपार केओ ठाढ़ हो । ओ आतंकित भय लगले पाछू हटि गेल । मुदा जहिना ओ पाछू हटल कि ओ आकृति सेहो गायब भऽ गेलैक । ओ बुझि गेल जे ई आकृति ओकर अपने रहैक ।

मुदा ओकर आतंक बढ़ैत गेलैक । जँ इएह हाल रहलैक तँ ओकर सूतब कठिन भऽ जयतैक। भऽ सकैछ जे ओ बेहोस भय खसियो पड़य । की ओ सेकेण्ड क्लासक डिब्बामे चल जाय ?

मुदा जा गाड़ी रूकतैक नहि ता दोसर डिब्बामे जायत कोना । तखन की ओ खतराक जंजीर घीचओ ? बेहोस भय खसत ताहिसँ तँ नीक जे जुर्माने चुकाबय । जँ ओकरा स्वीकार करय पड़तैक जे हम आतंकवश एना कयलहुँ, तँ सेहो स्वीकार कय लेत । आतंकसँ मुक्ति तँ भेटतैक।

मुदा जंजीर घीचिकऽ गाड़ीक रेकब गाड़ीपर डाकू सभकेँ नेओतब नहि होयत ? ओह, केहन बुड़बकी करय जा रहल छल । नीक इएह हेतैक जे बर्थपर पड़ि रहय आ मोनसँ आतंककेँ भगा कंबल ओढ़ि लेअय ।

तखनहि ओकरा डिब्बाक नील रंगक बत्ती भुक-भुकयलैक, छन भरि, किछु छन लेल मिझा फेर स्वयं ठीक भऽ गेलैक । ई के ओकरा डरेबाक कोशिश कऽ रहल छैक ? ई कोन शक्ति ओकरा पाछाँ लागल अछि ? ठीक ओकरा सुतबा काल बत्ती एना किए भय गेलैक ?

एकबेर फेर ओहिना भेलैक । एहि भयंकर जाड़हुमे सुधांशुकेँ घाम छूटय लगलैक । बत्तीसँ के एना खेलौड़ कय रहल अछि ? अगिला स्टेशन आबयमे एखन पाँच घंटा देरी छैक । एहि बीच तँ किछुओ भऽ सकैत अछि ।

जँ किछु होयबाक हेतैक तँ पाँच मिनटोमे भऽ सकैत छैक । एहिसँ नीक अवसर आर कोन? जाड़क राति हो । डिब्बामे दोसर यात्री नहि हो । पहाड़ीक सुनसान पहाड़ी इलाका हो । किछुओ भय सकैत अछि ।

तखन ओकर अपन स्मरणशक्ति पर तामस उठलैक । ओकर भूत-प्रेतक एकटा कथा मोन पड़लैक, जे ओकरा एकटा दोस्त कहने रहैक । बड़ छोट रहैक ओ कथा । एक यात्री दोसर यात्रीसँ पुछलकै, "तोरा भूतपर विश्वास छौक ?" दोसर यात्री उत्तर देलकै, "नहि, - अहाँकेँ ?" उत्तर सुनिकऽ पहिल यात्री कने हँसल आ छनहिमे गायब भऽ गेल ।

ओकर प्रोफेसर सेहो एहिना एकटा कथा सुनौने रहैक । ओ प्रोफेसर अंग्रेज रहय । ओकर एकटा संबंधी लंदनसँ एडिनबारा जाइत रहय । हठात् ओ देखलक जे ओकर सामनेक बर्थपर एकटा महिला मूड़ी उठा-उठा हँसि रहलि अछि । एहि बीच गाड़ी तँ कतहु रूकल नहि रहय जे महिला डिब्बामे चढ़ैत । महिलाकेँ देखिकऽ ओ आतंकित भऽ अपन पिस्तौल ताकए लागल कि

महिला ओकरापर झुकि ओकर मुँह चूमि लेलक। चुंबन तँ भेल मुदा ओ मृत्युक चुंबन छल । ओ सोनित बोकरय लागल । कोनहुना अगिला स्टेशन पर ई घटना कोनो रेल कर्मचारीकेँ सूचित कयलक आ ओतहि सोनित बोकरैत-बोकरैत मरि गेल ।

सुधांशुक देह काँपय लगलैक । एहि कम्पकेँ पहाड़ी इलाकाक रातुक बसातक परिणाम मानि गरमी अनबा लय पुनः तेजका बत्ती बारि देलक ।

ओकरा ट्रेनक गति कनेक मन्द भेलैक । कातक डिब्बासँ किछु हल्ला-गुल्ला सुनयलैक । सुधांशु आतंकित भय ओम्हर कान देलक । नहि, ओ कोलाहल भूतक नहि छल । ओकर कारण छल डकैत । की दस्युदलक सरदार ओएह महिला थिक जकरा विषयमे ओ बहुत किछु सुनने रहय?

ओ दुनू बत्ती मिझा देलक । अन्हार रहतै तऽ डाकू बूझत एहि डिब्बामे केयो नहि अछि, एहि दिस डेग नहि देत । भगवान करथि जे डाकू ठीके एकरा खाली डिब्बा बुझिकऽ छोड़ि देअय। आ जँ डाकू ई बूझि एही डिब्बामे पैसए जे डिब्बा खाली छै, एहीमे बैसिकऽ डकैतीक योजना बनाबी, तखन ?

ओकरा एकटा नव बात फुरलैक । ओ अपन बर्थपर सम्हरिकऽ ठाढ़ भऽ गेल ओकरा हाथमे टार्च रहैक, ताहिसँ दुनू बत्तीक बाहरी शीशा फोड़ि देलक जे काज ओ आइ धरि कहियो नहि कयने रहय । आब जँ बल्ब फोड़त तँ ओ बम जकाँ आबाज करतैक, आ जँ नहि फोड़त तँ बाहरी शीशा फोड़बे व्यर्थ ।

एकटा दोसर उपाय सुझलैक । बल्ब फोड़त किएक ? ओकरा निकलि लेलक आ सूटकेशमे राखि लेलक । ओकरा मनमे एकटा अप्रत्याशित खुशीक लहरि पसरि गेलैक। आब ओ सूति सकैत अछि ।

ओ आब कंबलमे घोसिया गेल । मुदा ओकरा एकटा विचित्र तरहक वेदना सतबय लगलैक। छनभरि जे ओकरा ओ सुख भेटल रहैक वास्तवमे से ओहि वेदनामे बिला गेलैक ।

ओकर अन्त:करण शंकाकुल भय उठलैक । की ओही डाकूक ओहिदलमे मिझरा गेल अछि? एखन ओ वास्तवमे जे कर्म कऽ गेल अछि तकर ओ कल्पनो नहि कयने छल ।

आब ओकरा इच्छा भय रहल छैक ओकर कंबल खूब मोट आ लम्बा –चौड़ा भऽ जाइक जाहिमे ओ नीक जकाँ नुका सकय ।

– मनोज दास

मैथिली अनुवाद, उपेन्द्र दोषी ।

●

शब्दकोश

अ

अनवरत – (अव्यय) लगातार

अतमा – (सं.) आत्मा

अनुयायी – (सं.) अनुगामी

अक्षुण्ण – (वि.) अखण्ड

असहिष्णुता – (सं.) जे सहिष्णु नहि हो

अपूर्व – (वि.) बेजोड़, विलक्षण

अपवाद – (सं.) सामान्य सँ भिन्न

अन्यत्र – (अव्यय) आनठाम

असंख्य – (वि.) अगणित

अक्षत – (सं.) पूजा निमित्त अरबा चाउर

अन्धविश्वास – (सं.) बिनु विचारनहि कोनो वस्तु वा विषय पर विश्वास

अक्षय – (वि.) जकर नाश नहि होय

अजगुत – (वि.) आश्चर्य

आ

आमिल – (सं.) खटाई (काँच आमक सूखायल)

आक्रान्त – (सं.) भयभीत

आश्रय – (सं.) सहारा

इ

इंक – (सं. पु.) रोसनाइ

इंच – (संपु.) एक फूटक बारहम भाग (अं)

इहार – (संपु.) इजहार, बयान

इह – (अव्यय) पीड़ा सूचक शब्द

ई

ईंट – (संपु.) ईंटा

ईशवी – (सं.) ईशामशीहक जन्म कालसँ चलल सम्वत्

उ

उपवन – (सं.) फूलवाड़ी

ऊ

ऊसर – (वि.) अन उपजाउ जमीन

ए

एकार्णव – (वि.) अतिशय जलप्लावित

एकटक – (सं.) बड़ी कालधारि आखिक तल्लीनता

ऐ

ऐंठन – (सं.) ममोड़, मचोर

ओ

ओगरब – (क्रि.) रखबारि करब

औ

औंघी – (सं.) निद्राक आगमन

क

कूल – (सं.) किनारा

कुटुम्ब – (सं.) अतिथि

कुसुम – (सं.) फूल

कोकिल – (सं.) कोइली

कथमपि – (अव्यय) किन्नहु नहि

कन्यागत – (सं.) कन्या पक्ष

ख

खखरी – (वि.) धन जाहिमे चाउर नहि हो

ग

गोहारि – (वि.) रोग व्याधि कें दूर करऽवलाक लेल ईष्टक, आराधना

गूढ़ – (वि.) कठिन, नुकायल

गुल्म – (सं.) झाड़ वा बीबाला वृक्ष जेना धान

गोसाउनि – (सं.) भगवती

घ

घँसब – (क्रि.) रगड़ब

च

चाम – (सं) खाल

चान – (सं) चन्द्रमा

छ

छटा – (सं.) शोभा, छवि

ज

जाड़काला – (सं.) जाड़क समय, शीत ऋतु

जन्मभूमि – (सं.) जन्म स्थान

जनश्रुति – (सं.) लोकक कहब

झ

झाँप – (सं.) देवी-देवताक बनल मौड़ी निमित्त

झिकझोर – (सं.) हिलब-डोलब

ट

टपकब – (कि.) टप-टप करब, बुन्द-बुन्द खसब।

ठ

ठाम – (सं.) स्थान

ड

डेग – (सं.) चलबा काल पयर एक स्थान सँ उठाय दोसर स्थानमे रोपब

ढ़

ढ़कना – (सं.) पात्रक मुँहबन्द करबाक पात्र, जे सरबासँ पैघ होइत अछि ।

त

ताजिनगी – (सं.) जीवन भरि

तपस्वी – (सं.) तपस्या कयनिहार

तीर्थ – (सं.) पुण्य धाम

थ

थेथर – (वि.) अपमान ओ उपेक्षा भेलहु पर निवृत्त नहि भेनिहार

द

दीर्घकालीन – (वि.) बेसीकाल धरि रहयवला

दुर्लभ – (वि.) जे सहजता सँ प्राप्त नहि हो

दिनचर्या – (सं.) दैनिक कार्य

दलान – (सं.) पुरूष वर्गक आवास स्थल (भवन)

दुर्दिन – (सं./वि.) अधलाह दिन, कष्टक समय, मेघाच्छन दिन, कुदिन

दराड़ि – (सं.) हालक अभावमे जमीन फाटव

ध

ध्वजा – (सं.) झण्डा

धूरा – (सं.) गरदा

न

निशि	–	(सं.) राति
निरन्तर	–	(अव्यय) लगातार
नभ	–	(सं.) आकाश
निर्धन	–	(वि.) गरीब

प

पुण्य	–	(सं.) नीक फलक उत्पादक
प्रीत	–	(सं.) प्रेम
प्राचीन	–	(सं.) पुरान
पवन	–	(सं.) हवा
प्रवृत्ति	–	(सं.) आदत, स्वभाव
पराक्रमी	–	(सं.) पराक्रमसँ युक्त
परोपकार	–	(सं.) एहन काज जाहिसँ आनक हित हो
परीक्षण	–	(वि.) जाँच, मूल्यांकन
पिहानी	–	(सं.) जकर अर्थ मुनल होयए

फ

फिरंगी	–	(सं.) अंग्रेज

ब

बसुधा	–	(सं.) धरती
बेढ़	–	(सं.) घेरा

बाहुल्य – (सं.) अधिकता, बहुलता

बखारी – (सं.) अन्नक भण्डार

भ

भूतल – (सं.) धरती

भगतिया – (सं.) जे भगैत गबैत छथि

भगत – (सं.) उपासक

भगैत – (सं.) देवी–देवताक अराधनामे गाओल जायवला गीत

म

मातृभूमि – (सं.) जन्म स्थान

मृदंग – (सं.) एक प्रकारक वाद्ययंत्र

माँनरि – (सं.) एक प्रकारक वाद्ययंत्र

मधुमय – (सं.) रसगर

मिथिला – (सं.) मैथिल बहुल (जतय मैथिली भाषा बाजल जाइत अछि)

मैथिल – (सं.) मिथिलावासी

मुँह बिधुऔने – (क्रि.) अप्रसन्न मुद्रा

य

यात्री – (सं.) यात्रा कयनिहार

र

राष्ट्र – (सं.) देश

रेत – (सं.) बालु

रज्जुमार्ग – (सं.) रस्सीक बनल मार्ग

रमणीयता – (सं.) सुन्दरता

ल

लंगट – (सं.) बदमास

व

विभीषिका – (सं.) आफत

विभूति – (सं.) महानपुरुष, गणमान्य

विलक्षण – (सं.) बहुत सुंदर

विषाद – (सं.) दु:ख

वनस्पति – (सं.) गाछ वृक्ष

विख्यात – (सं.) प्रसिद्ध

वाचनालय – (सं.) पत्र-पत्रिका आदि पढ़नाक सामूहिक कक्ष

विसुखल – (वि.) जे दूध देनाइ बन्द कय देने अछि।

श

शीश – (सं.) माथ

ष

षष्ठ – (वि.) छठम।

स

सन्निवेश – (सं.) मिलल, समावेश, अटनाइ, प्रवेश, घुसिअयनाइ, शामिल भेनाइ

स्वर्गादपि – स्वर्गसँ बढ़ि कऽ

ससिगर – (वि.) उपजाउ

साधना – (सं.) तपस्या

समाजी – (सं.) मुख्य गायकक सहयोगीगण

सुरभित – (वि.) सुगँधित

समाहित – कछड़, किनार, समावेश

संवर्धन – (क्रि.) बढ़ओनाइ, प्रोत्साहन

स्वार्थ – (वि.) अपन लाभक

सोल्लास – (सं.) उल्लासक संग

ह

हराहरी – (अपव्यय) मोटा-मोटी

हमजोली – (सं.) संगी

हकार – (सं.) बजाएब

हर्ष – (वि.) खुशी

ह्रास – (सं.) कमब, घटब

●